अक्षा

वीकेसी (आईआईएसयू/सीएमएसई) की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

अंक सं. 15, अप्रैल, 2024 - सितंबर, 2024

मुन्नार के चाय बागान हमेशा आपको अपनी सांसें थाम लेने
और अपनी शांत सुंदरता को निहारने पर मजबूर कर देते हैं।
ये बागान परंपराओं से ओतप्रोत हैं और मुन्नार को आज
एक पर्यटन स्थल बनाने में इनकी अहम भूमिका है।
ये प्राकृतिक रत्न हमारे खूबसूरत राज्य की शोभा बढ़ाते हैं।

जीएसएलवी-एफ14/
इन्सैट-3डीएस मिशन

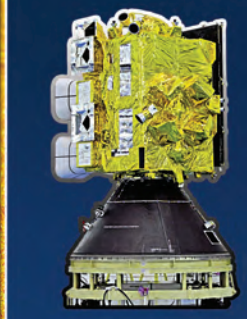

संपादकीय

संरक्षक

पद्मकुमार ई एस
निदेशक, आईआईएसयू

मुख्य संपादक

राजीव सिन्हा

संपादक मंडल

शशिभूषण तिवारी
संजय कुमार सिंह
लालमणि
प्रियदर्शन
उल्लास जोस
लक्ष्मी जी
कस्तूरी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

वी के सी (आईआईएसयू/सीएमएसई)
वट्टियूरकाव,
तिरुवनंतपुरम - 695 013
दूरभाष - 0471 2569129

प्रिय मित्रों,

आपकी प्रिय गृह पत्रिका "अक्ष" एक और रंगबिरंगे अंक के साथ आप सबके समक्ष भेट करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में विभिन्न समसामयिक विषयों, जैसे सामाजिक न्याय, प्रकृति के प्रकोप, पेयजल समस्या जैसे गंभीर विषयों, पर चर्चा हुई है, वहीं हमारी संस्कृति, ऑन-लाइन खरीदारी व मित्रों के प्यार की महत्ता पर भी ज़ोर दिया गया है। यात्रा वृत्तांत हमारी यात्रा संबंधित खट्टी-मीठी यादों का आइना होता है व जब यह यात्रा माता-पिता व परिवार के बाकी सदस्यों के साथ हो तो उसकी यादें बहुत ही प्यारी होती हैं। बेटी की सूझबूझ व जहां चाह वहां राह जैसी नारी शक्ति पर आधारित कहानियों में नारी की भूमिका दिखती है। मधुर कविताएं जो हृदय को छू जायें उनकी भूमिका किसी भी पत्रिका में नकारी नहीं जा सकते।

मित्रों, कृपया इस नए अंक को भी आप पहले जैसा प्यार व आर्शीवाद दें व हमें अपने सुझावों से अवगत कराते रहें।

धन्यवाद

जय हिंद! जय हिंदी!

राजीव सिन्हा

पन्ने पलटने पर

02 संपादकीय

08 इसरो की सफल उड़ानें

10 सामाजिक न्याय का महत्व

12 शिखर की ओर

13 दिल्ली में एक सप्ताह

15 माता-पिता के संग:
स्नेह और स्मृतियों से भरी

17 प्रकृति का प्रकोप

19 लक्ष्य की ओर

20 प्रशासनिक शब्दावली

21 अंतरिक्ष शब्दावली

22 पेयजल: भविष्य की गंभीर समस्या

23 हमारी संस्कृति

24 अर्थ

26 ऑन-लाइन खरीदारी

27 जहाँ चाह, वहाँ राह,

28 जीवन में मित्रों का महत्व

30 बेटी की सूझ-बूझ

31 राजभाषा प्रश्नोत्तरी

32 हिंदी कार्यशाला -
अप्रैल-जून, 2024 तिमाही

33 हिंदी कार्यशाला –
जुलाई-सितंबर, 2024 तिमाही

34 हिंदी पखवाड़ा समारोह-2024
की रिपोर्ट

36 जागरूकता कार्यक्रम
राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु

37 हिंदी पखवाड़ा समारोह-2024 के
विजेताओं की सूची

हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 14-15 सितंबर 2024

राजभाषा हीरक जयंती

भारत मंडपम, नई दिल्ली

जीएसएलवी-एफ14 / इन्सैट-3डीएस

प्रमोचक रॉकेट ने उपग्रह को वांछित भूतुल्यकाली अंतरण कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया। 8 फरवरी, 2024

जीएसएलवी-एफ14/इन्सैट-3डीएस मिशन का प्रमोचन शनिवार, 17 फरवरी, 2024 को 17:30 बजे आई.एस.टी. एस.डी. एस.सी-शार, श्रीहरिकोटा से किया जाएगा। अपने 16वें मिशन में, जीएसएलवी का उद्देश्य इन्सैट-3डीएस मौसम विज्ञान उपग्रह को भूतुल्यकालिक अंतरण कक्षा (जीटीओ) में तैनात करना है। इसके बाद की कक्षाएं बढ़ाने वाले युक्तिचालन यह सुनिश्चित करेंगे कि उपग्रह भू-स्थिर कक्षा में स्थित हो गया है।

जीएसएलवी-एफ14

भूतुल्यकाली उपग्रह प्रमोचक राकेट (जीएसएलवी) तीन चरणीय 51.7 मीटर लंबा प्रमोचक राकेट है जिसमें 420 टन का उत्थापन भार है। पहले चरण (जीएस1) में एक ठोस प्रणोदक (एस139) मोटर शामिल है, जिसमें 139-टन प्रणोदक और चार भू-भंडारण प्रणोदक चरण (एल40) स्ट्रैपऑन होते हैं जो प्रत्येक में 40 टन तरल प्रणोदक ले जाते हैं। दूसरा चरण (जीएस2) भी 40-टन प्रणोदक के साथ लोड किया गया एक भू भंडारण प्रणोदक चरण है। तीसरा चरण (जीएस3) एक क्रायोजेनिक चरण है जिसमें तरल ऑक्सीजन (एलओएक्स) और तरल हाइड्रोजन (एलएच2) की 15 टन प्रणोदक लोडिंग है। वायुमंडलीय व्यवस्था के दौरान, उपग्रह को ऑगो नीतभार आवरण द्वारा संरक्षित किया जाता है। जीएसएलवी का उपयोग संचार, नौवहन, भू संसाधन सर्वेक्षण और किसी अन्य स्वामित्व मिशन को करने में सक्षम विभिन्न प्रकार के अंतरिक्षयान को प्रमोचित करने के लिए किया जा सकता है।

इन्सैट-3डीएस

इन्सैट-3डीएस उपग्रह भूस्थिर कक्षा से तीसरी पीढ़ी के मौसम विज्ञान उपग्रह का एक अनुवर्ती मिशन है। जीएसएलवी-एफ14/इन्सैट-3डीएस मिशन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित है। इसे मौसम पूर्वानुमान और आपदा चेतावनी के लिए भूमि और समुद्री सतहों के संवर्धित मौसम विज्ञान प्रेक्षणों और निगरानी के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह उपग्रह वर्तमान में प्रचालनरत इन्सैट-3डी और इन्सैट-3डीआर उपग्रहों के साथ मौसम विज्ञान सेवाओं में वृद्धि करेगा। भारतीय उद्योगों ने उपग्रह के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के विभिन्न विभाग जैसे भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम

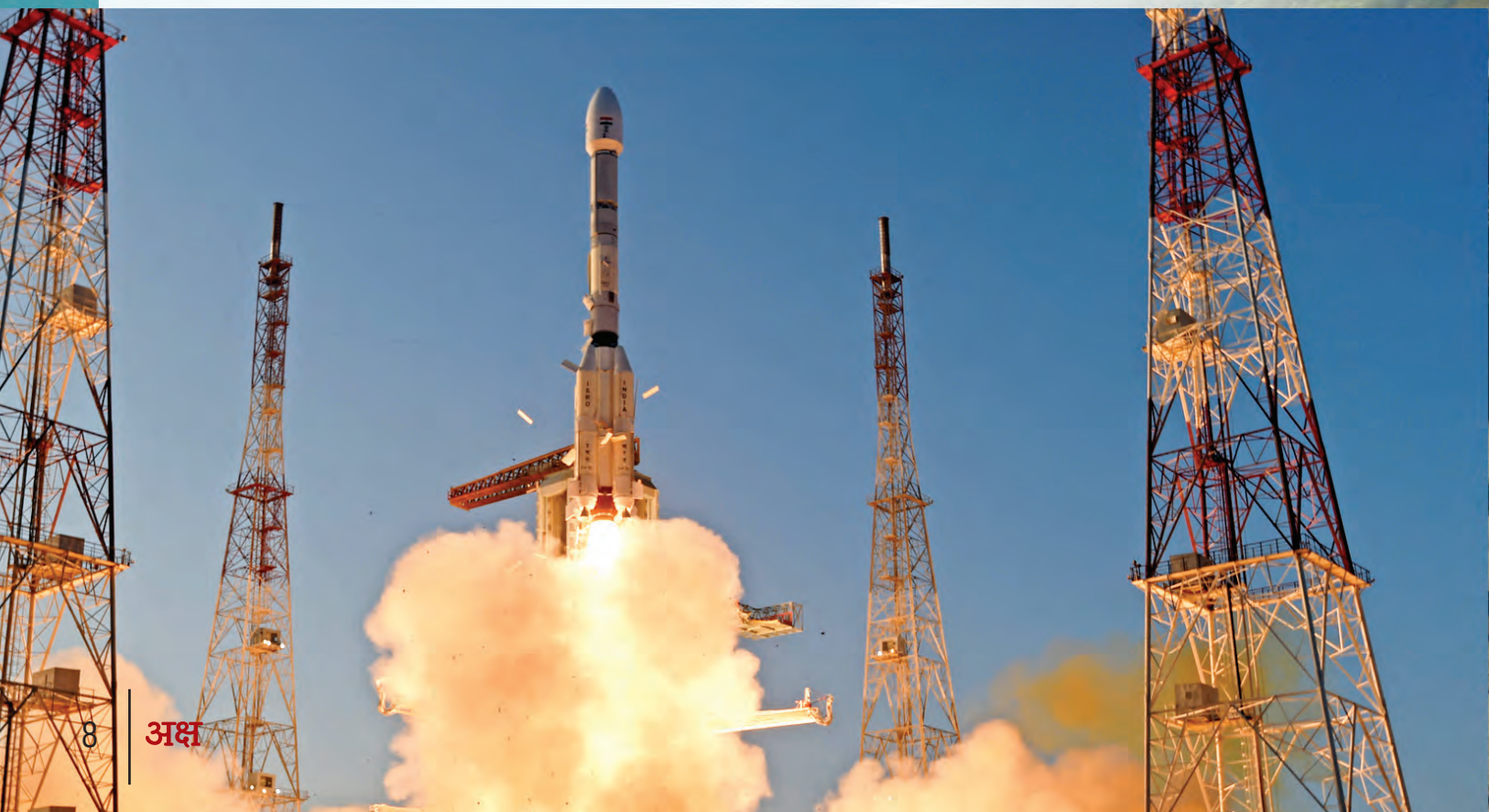

पूर्वानुमान केंद्र (एनसीएमआरडब्ल्यूएफ), भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम), राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईओटी), भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) और विभिन्न अन्य एजेंसियां और संस्थान बेहतर मौसम पूर्वानुमान और मौसम विज्ञान सेवाएं प्रदान करने के लिए इन्सैट-3डीएस उपग्रह डेटा का उपयोग करेंगे।

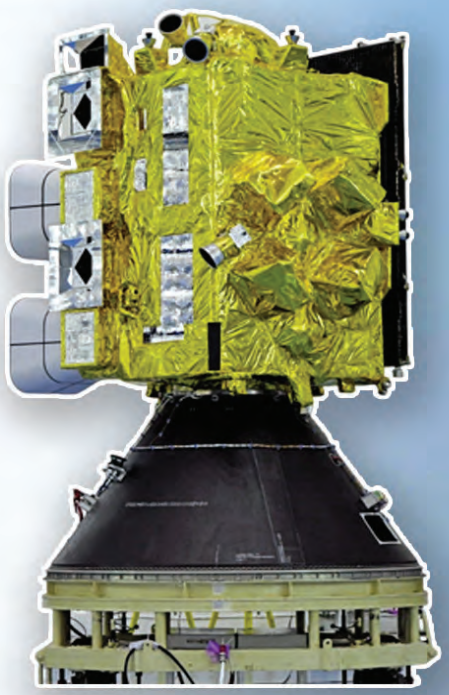

मिशन के प्राथमिक उद्देश्य हैं:

- पृथ्वी की सतह की निगरानी करना, मौसम विज्ञान के महत्व के विभिन्न वर्णक्रमीय चैनलों में समुद्र और इसके पर्यावरण का प्रेक्षण करना।
- वायुमंडल के विभिन्न मौसम संबंधी मापदंडों की ऊर्ध्वाधर प्रोफाइल प्रदान करना।
- डेटा संग्रह प्लेटफार्मों (डीसीपीएस) से डेटा संग्रह और डेटा प्रसार क्षमताओं को प्रदान करना।
- उपग्रह सहायता प्राप्त खोज और बचाव सेवाएं प्रदान करना।

उपग्रह की मुख्य विशेषताएं

मिशन	मौसम विज्ञान सेवाएं डेटा प्रसारण और उपग्रह सहायता प्राप्त खोज और बचाव सेवाएं
नीतभार	6 चैनल प्रतिबिंबित्र 19 चैनल ध्वनित्र डेटा प्रसारण प्रेषानुकर (डीआरटी) उपग्रह साधित खोज एवं बचाव प्रेषानुकर (एसएएस एंड आर)
कक्षित्र	भूस्थिर कक्षा
संरचनाएं	आई-2के प्लेटफार्म
तापीय	6 चैनल प्रतिबिंबित्र निष्क्रिय और सक्रिय ताप नियंत्रण प्रणाली निष्क्रिय कूलर पर तापीय भार को कम करने के लिए द्वि-वार्षिक यॉ फ्लिप
बिजली उत्पादन	42 V सनलिट विनियमित एकल बस विद्युत उत्पादन 1505W (इक्वीनोक्स) ग्रहण समर्थन के लिए आई-2के सोलर पैनल और लीथियम-आयन 100एएच बैटरी
प्रमोचन रॉकेट	4 मीटर व्यास के साथ वाला जीएसएलवी रॉकेट। ओगिव नीतभार आवरण मानक 937 मिमी व्यास. अंतरापृष्ठ

सामाजिक न्याय का महत्व

प्रेम प्रकाश
तकनीकी अधिकारी-सी
एसआर

न्याय का प्राकृतिक अर्थ है-संतुलन। परोक्ष रूप से अप्राकृतिक न्याय को सामाजिक न्याय से संबोधित किया जा सकता है। संपूर्ण सृष्टि का काल-चक्र संतुलन पर आधारित है। प्रत्येक वर्ग में संतुलन की आवश्यकता है। यह बात प्राणी-जगत के लिए भी सटीक है। जैसे-जैसे मानव-सभ्यता धरती पर आई वैसे-वैसे मानव की आवश्यकताएं पैदा हुईं, परिवर्तित हुईं या विलुप्त हुईं। इसी क्रम में समाज का निर्माण हुआ। समाज का अर्थ है – एक विशेष समुदाय। समाज में सामुदायिक वातावरण को इष्टतम बनाए रखने के लिए लोगों की आवश्यकताओं/इच्छाओं/राय के आधार पर नियम/कानून बनाए जाते हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं। उन्हें रंग-रूप, वेश-भूषा भाषा, धर्म-जाति के आधार पर बांटा जा सकता है और यह प्रमाणित भी है। इन सभी के मध्य एक बात सामान्य होती है – मनुष्य की मनोवैज्ञानिक/अंतःकरण चेष्टा या आवश्यकता। संक्षेप में हम बोल-चाल की भाषा में भावना कहते हैं।

सामाजिक न्याय का महत्व इसी मानवीय भावना के इर्द-गिर्द घूमता है। सामाजिक न्याय का महत्व गैर मानव प्राणी के लिए भी उतना ही सटीक है, परंतु सर्वप्रथम हम मानवता को प्राप्त कर लें तत्पश्चात् अन्य तत्वों की बात कर सकते हैं।

इस लेख में हम विचारात्मक स्तर से सामाजिक महत्व को समझेंगे। अतीत से लेकर वर्तमान तक मनुष्य ने समाज में अपना प्रभुत्व साबित करने के लिए सभी पहलुओं पर समुचित ध्यान नहीं दिया और इसी का नतीजा है – अन्याय।

न्याय के महत्व में हमें अन्याय शब्द पर गहन विचार करने की आवश्यकता है। हमें सामाजिक न्याय लाने की कोई आवश्यकता नहीं। जब हम अन्याय जैसे कुरीति को भगाते हैं तो आत्म संतुष्टि होती है तथा न्याय स्वयं पुष्पित होता है।

इतिहास प्रमाण है- संपूर्ण महाभारत एक महायुद्ध संग्राम बना। इसके मूल में था अन्याय।

ज़रा विचार कीजिए समाज में अन्याय के पलने से भगवान श्रीकृष्ण को जन्म लेना पड़ा। अतः न्याय कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

जब मनुष्य की आकांक्षाओं की प्राप्ति में कोई विरोध पैदा होता है तो वह आंतरिक रूप से विकृत हो जाता है और उसे कष्ट होता है।

यदि हम अपने देश की बात करें तो आज़ादी से पूर्व भारतीयों पर अंग्रेज़ों द्वारा कई अन्याय हुए हैं। इसके असंख्य उदाहरण पेश किए जा सकते हैं। लिंग के आधार पर सदैव नारियों के साथ समाज में अन्याय होते चले आ रहे हैं।

सामाजिक अन्याय के फलने-फूलने का राज़ मनुष्यों के अहंभावी होने में छुपा है। अनादर्शी लोग स्वयं के द्वारा बनाए गए मानदंडों के आधार पर सामाजिक गतिविधियों को तय करते हैं तथा अंजाम देते हैं। हाल का चित्र लिया जाए तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यूक्रेन-रूस युद्ध सामाजिक अन्याय का जीवंत उदाहरण है। पूरे संसार में आपराधिक गतिविधियां बढ़ती ही जा रही हैं।

सही मायने में सामाजिक न्याय परस्पर सहभागिता एवं सहानुभूति पर निर्भर करता है। संसार में सभी स्तर पर नियम बनाए गए हैं जिससे कि समाज में न्याय व्यवस्था स्थापित रहे। सरकारी मशीनरी प्रशासन का काम बढ़ती आबादी को मद्देनज़र रखते हुए समाज, देश-विदेश में न्याय को बनाए रखना है। वास्तव में सामाजिक न्याय एक चक्र के समान है। जनता ही सामाजिक कानून व्यवस्था बनाती है और फिर उसमें विघ्न डालकर अन्याय को बुलावा देती है।

सामाजिक न्याय को बनाए रखने के लिए न्याय पालिका का गठन लोकप्रिय है परंतु न्याय करने की प्रक्रिया विशेषतः भारत में लाचार है। यह भी एक प्रकार का सामाजिक अन्याय है।

हम चीज़ों को जितना विखंडित करेंगे उतना ही भेदभाव वाला दृष्टिकोण पैदा होगा। यह किसी किसी के लिए अन्याय का कारण बनता है।

सामाजिक न्याय का सार सभी को जोड़कर दृष्टि गोचर करने में है।सामाजिक न्याय यदि एक परिवार से प्रारंभ हो तो संभव है कि परिवारों के समुदाय भी अन्यायी नहीं होंगे। समुदाय ही समाज का निर्माण करता है। समाज संतुष्ट तो देश भी संतुष्ट।

सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए मूल उपाय निम्नलिखित हो सकते हैं-

- परोपकार की भावना अपनाएं।
- निस्वार्थ भाव से मदद करें।
- संसाधनों का उपयोग बुद्धिमता से करें।
- दर्प न करें।
- दूसरों के प्रति सहानुभूति बनाए रखें।
- ध्यान दें।
- दुःख की परिस्थिति में धैर्य बनाए रखें।
- कष्ट को बर्दाश्त करें।

सामाजिक न्याय के विषय पर चर्चा करने के लिए एक जीवन भी कम है। अतः हम मूल तत्वों की रूपरेखा समझकर इसे स्थापित कर सकते हैं।

निष्कर्षः-

सामाजिक न्याय के महत्व को समझकर यदि वास्तव में उसपर अमल किया जाए तो यह संसार स्वर्ग बन जाए। पं.श्रीराम कृष्ण परमहंस ने सही कहा है-

"मनुष्य का जन्म तो सहज है, परंतु मनुष्यताउसे कठिनाई से प्राप्त करनी पड़ती है।" यदि समाज से अन्याय खत्म हो जाए तो मनुष्यता प्राप्त करना सहज है।

अंत में मैं एक सूक्ति द्वारा अपना लेख समाप्त करना चाहूँगा।

"अयं निजः परोवेति गगना लघु चेतषाम्।
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम।।"

इस सूक्ति के साथ सामाजिक न्याय स्थापित किया जा सकता है।

अंधविश्वास कमज़ोर दिमागवालों का धर्म है।

एडमंड बर्क

शिखर की ओर

जगरूप
वैज्ञा/इंजीनियर-एसएफ,
एसआर

ज़िंदगी के सफर में, चाहे कितनी मुश्किलें हों,
कदम-कदम पर हो बिछे, चाहे कितने कांटे हों।
तू न झुक, तू न रुक, बस बढ़ा चल आगे की ओर,
मंजिलें हैं वो जहाँ पर, तू बढ़ा चल उस 'शिखर की ओर'।।

जिस मिट्टी में पैदा हुआ, जन्मा जिस माँ की कोख से,
सर्वस्व तू अर्पण कर दे, इन पूजनीयों को अपनी ओर से।
सेवा कर इस माँ भारती की, ले जा इसे प्रगति की ओर,
मंजिलें हैं वो जहाँ पर, तू बढ़ा चल उस 'शिखर की ओर'।।

दोस्तों का साथ होगा, दुश्मनों का दुस्साहस होगा,
ज़िंदगी की कसौटियों का, सिर पर तेरे ताज़ होगा।
साथ लेके दोस्तों का, तू चला-चल आगे की ओर,
मंजिलें हैं वो जहाँ पर, तू बढ़ा चल उस 'शिखर की ओर'।।

मुश्किलों की लौ मैं तपकर बनना तू लोहे से कुंदन,
हार से लड़कर जितना जिसने सिखाया, करना तू सदा उनका वंदन।
बांटता चलना हर एक सीख को, साथ लेके सबको उस पथ की ओर,
मंजिलें हैं वो जहाँ पर, तू बढ़ा चल उस 'शिखर की ओर'।।

शनैः शनैः यह जीवन पूर्ण होगा, संतोष से संपूर्ण होगा,
शून्य से तू आया जहाँ से, शून्य में ही पूर्ण होगा।
कण-कण में मिलकर इस यशोधरा के, बह जा तू सागर की ओर,
मंजिलें हैं वो जहाँ पर, तू बढ़ा चल उस 'शिखर की ओर'।।

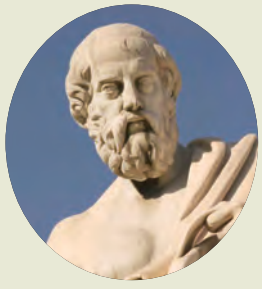

लोगों के तीन वर्ग हैं –
ज्ञान के प्रेमी, सम्मान के प्रेमी और लाभ के प्रेमी।

प्लेटो

दिल्ली में एक सप्ताह

लक्ष्मी जी
सहायक निदेशक (राभा)

वर्ष 2024 जून में हमारे शाखा सचिवालय द्वारा नई दिल्ली में आयोजित तकनीकी अनुवाद से संबंधित विशेष प्रशिक्षण में भाग लेने का अवसर मिला। वीएसएससी से पहली बार हम तीनों, यानी चंदना, विनीता और मैं, किसी यात्रा पर निकल रही थीं। कार्यालय ने हम तीनों को हवाई यात्रा के लिए अनुमति दे दी। व्हील चेयर मांगने के कारण मुझे दो घंटे पहले हवाई अड्डा पहुंचना था, क्योंकि मुझ जैसों के लिए वेब चेक-इन का प्रावधान उपलब्ध नहीं है। कार्यालयीन गाड़ी में आराम से पहुंचकर सारी प्रक्रियाएं पूरी करके फिर शुरू हुआ लंबा इंतज़ार। हवाई अड्डे में मुझे हर तरह का समर्थन प्राप्त हुआ और कभी भी अकेली नहीं महसूस की गई।

तिरुवनंतपुरम से हम तीनों ही नहीं बल्कि एलपीएससी से श्रीजा और आईआईएसटी से सिमी भी इस यात्रा में शामिल थीं। वे सब नियमानुसार समय पर पहुंच गईं। रात को साढ़े सात बजे के आस-पास हमारी यात्रा शुरू हुई और ग्यारह बजे से पहले हवाई जहाज़ दिल्ली पहुंच गया। उतरते समय कैबिन व्हील चेयरों की कमी के कारण दिव्यांग व्यक्तियों को एक-एक करके विमान से बस में बिठाया गया। कुल तीन लोग मौजूद थे तो काफी समय लगा। तब तक मेरी चार हमसफर सहेलियां बाहर प्रतीक्षा करती रहीं..... करती रहीं। आखिर जब सामान लेने के

लिए गई तो मेरा लैगेज गायब था। आधी रात को अनजान शहर में बिना लैगेज के मैं बैठी रही। मेरी मदद के लिए जो कर्मी आए थे, उन्होंने काफी तलाश के बाद दूसरे कन्वेयर बेल्ट से मेरा लैगेज ढूंढ़ निकाला।

हम जब अपने दिल्ली वाले अतिथि-गृह में पहुंच गए तब तक डेढ़ बज चुका था। वहां पहुंचकर पता चला कि अधिकारियों के लिए अलग कमरा और कर्मचारियों के लिए दो-दो व्यक्तियों के लिए एक कमरे का प्रावधान किया गया है। इस तरह हम तीनों में से विनीता और चंदना अलग कमरे में एक साथ हो गईं।

पहले से की गई चर्चा के आधार पर सोनू जी मेरे लिए अलग कार की व्यवस्था कर रखे थे, क्योंकि बस से यात्रा करना मेरे लिए संभव नहीं था। अगले सबेरे प्रशिक्षणार्थियों के लिए बस

आ गई तो उससे थोड़े पहले मेरे लिए कार आ गई। अतिथि-गृह के सामने कर्मचारियोंके क्वार्टर्स हैं। वहां से श्री जयंत मेरे साथी बनकर कार्यालयीन कार लेकर आए और अगले पांच दिन रोज़ सुबह-शाम मेरा साथ दिया। गाड़ी का चालक सरदार जी थे और मुझ जैसे मलयाली को सरदार एक नया अनुभव था, क्योंकि केरल में सरदारों से मुलाकात काफी कम होती हैं।

अतिथि-गृह से लंबी यात्रा के बाद शाखा सचिवालय की कक्षा तक पहुंचते थे। पहले दिन उद्घाटन सत्र का आयोजन बड़े श्रोताकक्ष में हुआ। फिर कक्षाएं चलने लगीं। बीच में जलपान की व्यवस्था थी और मध्याह्न-भोजन ऊपरी तल के हॉल में होता था। मैं पांचों दिन खुशी-खुशी पूरी और सब्जी खाती रही।

शाम को हमें स्नैक्स का बॉक्स मिलता रहा। भूख लगने पर उसमें से कुछ न कुछ लेकर खाती और बचा हुआ सब मैं सरदार जी को देती रही। मैं हर रोज़ शाम को अतिथि-गृह लौटती तब 7 बजने पर भी धूप का एहसास खत्म नहीं होता था। वह दिल्ली की विशेषता थी। जब मैं कार में सरदार जी और जयंत जी के साथ अतिथि-गृह जाती तो मेरे अन्य साथी बस में से बीच रास्ते उतरकर घूमने और शॉपिंग करने का मज़ा लेकर थोड़ी और कभी काफी देर से लौटतीं। मुझे खाना हर वक्त कमरे में देने का प्रावधान था और वहां के सारे कर्मी मेरा अच्छे से ध्यान रखते रहे।

इस बीच मुझे अपने लिए नया वॉकर खरीदना था तो किसी दिन मध्याह्न-विराम के दौरान जेडी साहब की अनुमति से उन्हीं के डीईओ रविकांत को लेकर मैं निकली। सरदारजी और रविकांत भाई की सहायता से ऐसे ही एक वॉकर खरीद पाई जैसा मॉडल मोरे पास पहले से था। एम्स के होने के कारण तिरुवनंतपुरम की तुलना में दिल्ली में ऐसी चीज़ें अधिक मिलती हैं।

कार्यक्रम के बीच हमें संसद देखने का सुनहरा अवसर भी दिया गया। उस सोच के लिए आयोजकों को अवश्य बधाई देनी चाहिए। एक रात हमारे लिए विशेष कार्याधिकारी श्री हरिकृष्णन की ओर से विशेष भोजन दिया गया। पता ही नहीं चला कैसे 5 दिन चले गए। इतने दिनों में कभी भी मैं घूमने या शॉपिंग के लिए नहीं निकली थी। छठे दिन, यानी शनिवार को, मैंने सरदारजी को ही अपनी यात्रा के लिए बुक किया और रविकांत भाई फिर से मेरी सहायता करने तैयार हुए। दोनों ठीक वक्त पर पहुंच गए और हम निकले सरोजिनी मार्केट, जहां पिछले दिनों में बाकी सबों का दौरा हो चुका था।

शुक्रवार को ही सरदारजी स्वयं जाकर किराए पर एक व्हील चेयर लाए थे, जिसकी उपलब्धता के बारे में जयंत जी ने सूचना दी थी। उसके साथ हम तीनों पूरे सरोजिनी नगर घूमे और शॉपिंग के साथ-साथा खाना-पीना भी हो गया। केरल से आई मैं, पंजाब के सरदारजी तथा यूपी के रविकांत भाई एक टीम बनकर चले। दोनों ने बारी-बारी से व्हील चेयर चलाया। वहां से फिर हम कोनाट प्लेस भी गए। उन दोनों ने मेरा अच्छा साथ दिया। शाम को हम लौटकर आए तो मुझे अतिथि-गृह में छोड़कर वे दोनों गए।

अगले दिन वापस तिरुवनंतपुरम आने के लिए तैयार होना था। पैकिंग के लिए अतिथि-गृह के लड़कों की खूब मदद मुझे मिली। आते वक्त हम पांच और हमारी पांच पेटियां थीं। अब शाखा सचिवालय से उपहार के रूप में मिली एक-एक पेटी और थी। मेरे पुराने वॉकर के साथ नया भी ले जाना था। गाड़ी वही रही और सामान दो गुना बढ़ गए तो क्या हाल था, उसे याद न करना अच्छा होगा।

दिल्ली विमान पत्तन में समर्थन के लिए जो व्यक्ति रहे उन्होंने मुझे बहुत ध्यान से हवाई जहाज़ में बिठा दिया। तिरुवनंतपुरम पहुंचने पर,अलग-अलग बुकिंग करने से, विनीता के लिए टैक्सी आई थी और चंदना अपने पतिदेव के साथ चली गईं। श्रीजा और सिमी अपने-अपने कार्यालयों से आई गाड़ियों में चली गईं। मेरे लिए गाड़ी लेकर षोजन आए थे, जो सालों से मेरी कार्यालयीन सवारी का चालक हैं। इस तरह, बहुत सारी नई बातों के साथ, नए अनुभवों सहित अपनी दिल्ली यात्रा के बाद मध्याह्न-भोजन के लिए मैं अपने घर पहुंच गई।

आदित्य कुमार
वरि.तकनीकी सहायक-ए
सीएमएसई

माता-पिता के संगः स्नेह और स्मृतियों से भरी

मानव का जीवन ही एक यात्रा है, जिसमें मनुष्य हर पल अपने अनुभवों को संजोता है एवं इन अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है। परंतु जब बात असल यात्रा की आती है, तो इस पर जीवनपर्यंत यादें बनी रहती हैं, और ये यादें हमेशा प्रफुल्लित करती हैं।

इसी प्रकार की यात्रा करने का सौभाग्य मुझे अपने माता-पिता के साथ प्राप्त हुआ। कई सालों के हठ के बाद माता-पिता मेरे साथ तिरुवनंतपुरम आने के लिए तैयार हुए। पिछले साल जून के महीने में हमने यह यात्रा प्रारंभ की। हमारे पूर्व के अनुभवों से मैंने माता-पिता से ट्रेन से चलने का आग्रह प्रकट किया, जिससे वे भारत की विविधता एवं सांस्कृतिक भिन्नता का उत्तम एहसास प्राप्त करें।

हमने तीन दिनों की यह यात्रा कई चरणों में करने की योजना बनाई ताकि थकान और मनोरंजन का समांजस्य बना रहे।

यात्रा-पूर्व तैयारियांः

चूंकि यह सात दिनों की लंबी यात्रा बहुत चरणों में थी, हमने खाने पीने की टिकाऊ सामग्री, जैसेः- चूड़ा का सुप्रसिद्ध भूँजा, बिहार प्रसिद्ध ठेकुआ एवं कई घरेलू पकवान तैयार कर लिए। संपूर्ण यात्रा में माँ के स्वाद का आनंद और स्थानिक व्यंजनों का मिश्रण मानो जीवन में एक नई मिठास ला रहा था। हमने पूर्व में ही यात्रा को सुगम बनाने के लिए रेल के 2एसी (वातानुकूलित) कक्ष में अपना आरक्षण पक्का करवा लिया था। यात्रा के दौरान उपयोग रोज़मर्रा की चीज़ें एवं कपड़े अच्छे से व्यवस्थित कर लिए थे।

यात्रा प्रारंभ एवं अनुभव

ट्रेन 2 जून को पटना से कोलकत्ता-विशाखपट्टनम्-विजयवाड़ा-चेन्नई-कोयंबत्तूर मार्ग से होते हुए तिरुवनंतपुरम आना था। इस संपूर्ण यात्रा को हमने तीन भागों में विभक्त किया थाः-

1) पट्ना – कोलकत्ता
2) कोलकत्ता – चेन्नई
3) चेन्नई – तिरुवनंतपुरम

इन तीनों के बीच हमने एक दिन का अंतराल रखा ताकि स्थानिक आकर्षणों का मज़ा उठाया जा सके। यह यात्रा मेरे माता-पिता की दक्षिण भारत की पहली यात्रा थी। दोनों उत्साहित होने के साथ-साथ नई-नई संस्कृतियों को जानने की इच्छा से भरे थे।

3 जून को कोलकत्ता पहुँचने के बाद हमने उन्हें हावड़ा का प्रसिद्ध ब्रिज, विक्टोरिया पैलेस, इको पार्क इत्यादि के दर्शन कराए। मेरी माँ विक्टोरिया पैलेस की भव्यता एवं श्रम कुशलता को देख स्तब्ध थी। उसे ऐसा लगा जैसे मानो विश्वकर्मा ने खुद इस महल की रचना की हो। पूरे दिन घूमने के पश्चात् हमने रात में स्थानीय होटल में विश्राम करने का निर्णय किया, जहाँ हमने स्थानीय व्यंजनों (रसगुल्ला, मछली एवं चावल) का आनंद उठाया।

4 जून की शाम को हमने चेन्नई के लिए ट्रेन से प्रस्थान किया। यह संपूर्ण यात्रा का सबसे लंबा भाग होने के साथ-साथ मज़ेदार एवं रोमांचक भी था, जहाँ मेरे मात-पिता ने प्रत्येक 10 घंटे के अंतराल पर नई भाषा एवं संस्कृति को पहली बार देखा। बंगला से प्रारंभ होकर ट्रेन ने उड़िया, तेलुगू, तमिल भाषी क्षेत्रों में

प्रवेश किया, हमने ट्रेन में स्थानीय व्यंजनों (डोसा, इडली, नारियल की चटनी इत्यादि) का मज़ा लिया। मुझे आज भी याद है वह पल जब मैंने राजमुंद्री में ट्रेन से उतरकर केले का चिप्स खरीदा और माँ को दिया। वे केले का चिप्स देखकर हैरान थी। क्योंकि हमारे यहाँ इस व्यंजन का प्रचलन नहीं था, परंतु खाने में यह माँ को काफी स्वादिष्ट लगा।

चेन्नई पहुँचने के उपरांत हम लोग मरीना बीच गए, वहाँ की समुद्र की लहरें मानो संपूर्ण पृथ्वी को अपनी गोद में समेटी हुई थीं। हम तीनों ने बीच पर लगभग तीन-चार घंटे समय बिताया, फिर शहर के दर्शन के लिए निकल पड़े। वहाँ हमने राष्ट्रीय मछलीघर, पार्क इत्यादि के दर्शन किए। रात्रि में हमने तमिल प्रसिद्ध पोंगल का सेवन किया। इस संपूर्ण यात्रा में पिताजी स्थानीय लोगों से वार्ता करने का प्रयास भी कर रहे थे, ताकि उनसे उनकी सांस्कृतिक मान्यता, इतिहास एवं विविधताओं को समझ सके। हमने चेन्नई में एक दिन के लिए होटल में विश्राम किया।

6 जून की संध्या को ट्रेन चेन्नई से तिरुवनंतपुरम के लिए रवाना हुई। लंबी यात्रा के कारण थकान स्वाभाविक थी। परंतु नई चीज़ों को देखने और समझने की जिजीविषा से मानो हमारे माता-पिता में एक नया जोश भर दिया हो। यात्रा के दौरान मैं भी दक्षिण भारत के अपने अनुभवों को उनके साथ साझा कर रहा था। यहाँ के इतिहास, भूगोल, सांस्कृतिक मूल्यों को जानकर उन्हें काफी अच्छा लगा, तब वे वास्तव में जान पाए कि भारत को “विविधता में एकता” वाला देश क्यों माना जाता है।

यात्रा का अंतिम चरणः

7 जून को तिरुवनंतपुरम पहुँचने के बाद हमने दो दिनों तक अपने आवास पर आराम किया, और फिर तिरुवनंतपुरम की सैर पर निकले। मैंने उनको विश्व प्रसिद्ध पद्मनाभस्वामी मंदिर के दर्शन कराए, पिताजी ने कौतूहल से इसके वैभव और निर्माण इतिहास के बारे में भी जानकारी ली। सायंकाल में जब सूर्यास्त हो रहा था, तो मंदिर की ऊंची अटारी पर बने एक कक्ष के माध्यम से डूबते सूर्य की वह छवि अत्यंत मनमोहक एवं अद्भुत थी। अगले कुछ दिनों में मैंने उन्हें कोवलम बीच, संग्रहालय, चिड़ियाघर, लुलु शॉपिंग मॉल इत्यादि दिखाए। तिरुवनंतपुरम में लगभग सात दिनों तक वास करने के पश्चात् वे हवाई मार्ग से पटना लौट गए।

आज भी जब मैं इन यात्राओं को याद करता हूँ को चित्त रोमांचित हो जाता है। इस संपूर्ण यात्रा में माता-पिता से प्राप्त स्नेह अविस्मरणीय बन गया एवं उनके लिए भी यह जीवन का एक अनोखा अनुभव था जहाँ वे गंगा के मैदान से निकलकर मध्य भारत से होते हुए, पश्चिमी घाटों की भूआवृतियों, प्राकृतिक भिन्नताओं, सांस्कृतिक भिन्नताओं तथा वास्तव में “एक भारत श्रेष्ठ भारत” के वास्तविक मूल्य को समझ पाए। विभिन्न क्षेत्रों के घरों की निर्माण शैली भी वहाँ के स्थानीय भूगोल से कारण अलग-अलग थी। हमारे पिताजी ने तिरुवनंतपुरम में सामान्यतः घर के ऊपर बनी संरचना को मेरे भूस्वामी से समझकर अपने यहाँ इस्तेमाल किया। इस प्रकार उन्होंने यात्रा की विभिन्न चीज़ों, जेसे व्यंजनों इत्यादि, के बारे में सीखकर और उन्हें अब घर पर भी बनाकर आनंद लेते हैं।

उपसंहारः-

यात्रा न सिर्फ मनोरंजन का साधन है, अपितु खुद के चित्त को समझने तथा आत्मा को देने के लिए असीम ऊर्जा है, जो जीवन के मूल्यों पर गहरा प्रभाव छोड़ सकती है। माता-पिता के साथ यह यात्रा जीवनपर्यंत मुझे एक सुखद ऊर्जा प्रदान करती रहेगी तथा मुझे उनके साथ अन्य यात्राओं पर जाने के लिए प्रेरित करती रहेगी। अंत में महात्मा गांधी की कही बात याद आ रही हैः- “इस देश को किताबों से समझना मुश्किल है, इसे समझने के लिए यात्रा अपरिहार्य है” काफी सही लग रही है।

“यात्र अपने आप में एक दर्शन है।”

रवींद्र नाथ टैगोर।

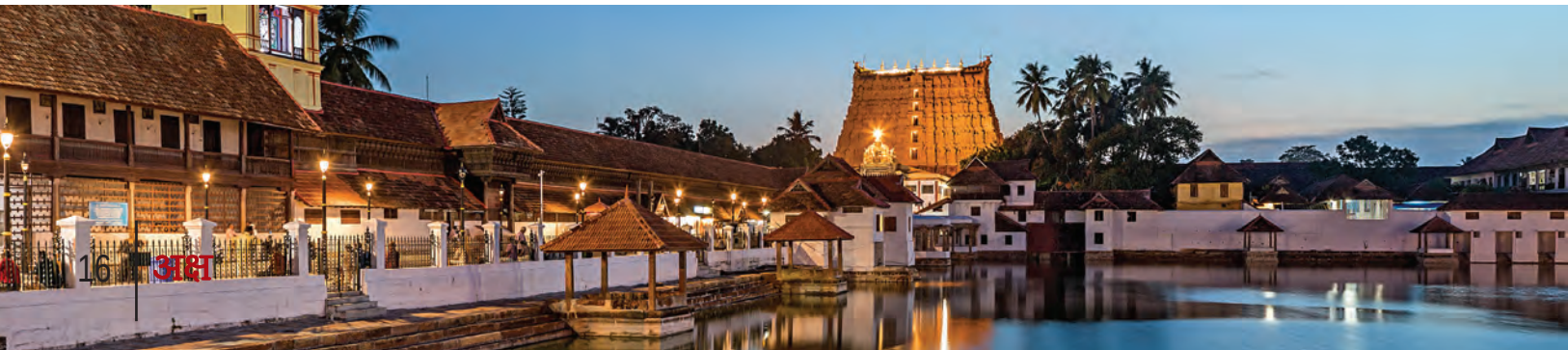

प्रकृति का प्रकोप

प्रेम प्रकाश
तकनीकी अधिकारी-सी
एसआर

प्रस्तुत चित्र में एक अर्ध नग्न बालक को दिखाया गया है जिसने अपने एक हाथ में बाल्टी पकड़ रखी है। कदाचित् वह जल की तलाश में पूर्ण हताश नल से सटी दीवार पर जल की बूंदों की प्रतीक्षा कर रहा है।

उपरोक्त वर्णन में तस्वीर में दिखाए गए प्रत्यक्ष भाव को दिखाया गया है जो किसी के लिए भी वर्णित करना सरल है किंतु यह तस्वीर अपने भीतर कई संवेदनाएं छुपाई हुई है। इन भावों को शब्दों द्वारा उतारना एक कला समान है।

यह तस्वीर मानो गागर में सागर।

मेरे संदर्भ में प्रदर्शित चित्र में जो अर्थ छुपा है उसे मैं निम्न खंडों में अपनी भावनाओं द्वारा प्रकट करने की एक सहज कोशिश कर रहा हूँ।

प्रस्तावना

जैसा कि सर्वविदित है, हमारी सृष्टि का संचालन स्वयं सृष्टि ही करती है। प्रत्येक घटना क्रमानुसार, चक्रीय रूप से प्रकृति में संतुलन बनाए रखने हेतु घटित होती है। जब धरा पर जीवन प्रस्फुटित हुआ तब से जीव-जगत अपनी आवश्यकताओं को प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग से पूरा करता आया है। धीरे-धीरे समय ने अपना रूप बदला, प्रकृति ने अनेक नव गठित अनुक्रियाएं, जीवन के नए स्वरूपों को अपने भीतर समाहित किया। जब मानव-सभ्यता ने संसार में कदम रखा तो अपनी बुद्धि का अनजाने में दुरुपयोग करते हुए सभ्यता से असभ्यता की ओर बढ़ने लगा। और वर्तमान में स्थिति इतनी विकृत हो चुकी है कि आज पूरा विश्व प्रकृति, जलवायु को लेकर ज्वलनशील चर्चाएं कर रहा है, परंतु स्थिति बदतर होती जा रही है। मेरे लेख में इन्हीं समस्याओं को विस्तार से उल्लेखित किया गया है।

प्रकृति में जब विषम परिवर्तन होते हैं तो उसका प्रभाव प्रकृति के प्रत्येक घटक पर पड़ता है। परंतु मनुष्यों द्वारा बनाई गई श्रेणियों के अनुसार निम्न वर्ग तथा अति निम्न वर्ग विशेष रूप से प्रतिबिंबित होते हैं। बढ़ती आबादी सभी समस्याओं का मूल है। मनुष्यों ने प्रकृति के सभी कोनों से संसाधनों को ढूंढ़ निकाला है। अपनी मूल आवश्यकताओं से बढ़कर संसाधनों का दुरुपयोग

प्रकृति के संतुलन को डंगमगा रहा है। इसीका प्रभाव चित्र में भी प्रदर्शित किया गया है।

विश्व के कई भागों में प्राकृतिक स्थिति असामान्य हो चुकी है। कहीं अल्पवृष्टि तो किसी भाग में अतिवृष्टि, कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा। जलवायु परिवर्तन के अनेक रूप हो सकते हैं। सभी का प्रभाव प्रतिकूल होता है। स्थिति ऐसी भी हो चुकी है कि मूलभूत आवश्यकताएं-जल, वायु की उपलब्धता, शुद्धता पर प्रश्न चिह्न लगा चुके हैं। विकसित प्रौद्योगिकी, विकसित देश बनने की होड़ में शहरीकरण औद्योगीकरण की प्रक्रियाएं जल चक्र, कार्बन चक्र, भोजन चक्र को प्रभावित कर रही हैं। नल है पर जल नहीं। जल है पर पीने योग्य नहीं। पीने योग्य है तो महंगी बोतलों में बंद, सड़ा हुआ। पता नहीं कैसे पीने की आदत हो गई।

वायु है पर विषाक्त, दूषित। अस्पतालों में ऑक्सीजन बंद किए गए हैं जिससे कि अंत में उसकी कमी खरीद कर पूरी की जा सके। बेचारा मनुष्य विवश है। जानता सबकुछ है फिर भी मूर्खतापूर्ण परिचय देने से नहीं झिझकता।

वृक्षों की कटाई से मृदा अपरदन, अल्पवृष्टि सूखा, भुखमरी जैसी गंभीर समस्याओं का जनन होता है। जब जल चक्र असंतुलित होता है तो रोज़मर्रा की परिस्थिति भी विकट होने लगती है।

वर्तमान में, बैंगलूर शहर की स्थिति सर्व विदित है। बड़े-बड़े फ्लैटों में रहनेवाले जल के अभाव में कई उपाय अपना रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब ऐसी स्थिति सभी जगह देखने को मिलेगी।

कुल मिलाकर प्रकृति को बचाने की ज़िम्मेदारी हमारे कंधों पर है। मेरे अनुसार, आज के परिप्रेक्ष्य में, निम्नलिखित सुझाव हैं-

- अपनी आवश्यकताओं को कम करें।
- दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति सहानुभूति रखें।
- प्रकृति का अवलोकन करें।
- साधारण घटनाओं के मूल को समझें, अमल करें।
- कार्बन पद चिह्न को समझें तथा संसाधनों का बुद्धिमता से प्रयोग करें।
- जल पुनः चक्रण द्वारा जल की पूर्ति करें।
- जलवायु दूषित करनेवाले कारकों को पहचानें तथा उन्हें कम करें।
- परोपकार की भावना से अन्य को देखें।
- दूसरों को शिक्षित करने से पूर्व, स्वयं अमल करें।
- याद रखें, नीले गगन, नीली धरती तथा हरे जंगलों द्वारा ही हमारी धरती व हमारा जीवन रंगीन बनते हैं। इनकी गरिमा बनाएं रखें।
- संक्षेप में, हम प्रकृति से हैं, प्रकृति हमसे नहीं। इस बात पर अमल करें।

निष्कर्षः

प्राकृतिक असंतुलन का प्रभाव अति गंभीर है। यदि यथा समय इसे नियंत्रित न किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब धरती को शुक्र गृह जैसा समझा जाने लगेगा। ऐसा मानना है कि पूर्व में शुक्र ग्रह पर भी जीवन था।

हमारी गतिविधियां सामान्य तभी तक हैं जब तक प्रकृति सहन कर रही है। उसके प्रकोप से त्राहिमाम् जैसी स्थिति पैदा हो सकती है।

अंत में अपनी पंक्तियों द्वारा अपना लेख समाप्त करना चाहूंगा।

अति ग्रीष्म, शीत हो, बाढ़ या सूखा,
करता सभी को नंगा, भूखा।
आंखों में बचा है थोड़ा भी नीर,
तो साबित करो बचा कर नीर।।

लक्ष्य की ओर

गिरराज गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसएफ
एसआर

कुछ करना है जीवन में, तो डटकर चल
थोड़ा दुनिया से हटकर चल
लीक पर तो हर कोई चलता है
कभी इतिहास को पलट कर चल।।

बिना काम के लक्ष्य कैसा
बिना मेहनत के लक्ष्य कैसा
जब तक न हो मंज़िल हासिल
राह में आराम कैसा।।

अपूर्ण सा लक्ष्य रख
मन में न कोई बहाना रख
लक्ष्य सामने है, उसी पर बिशाना रख।।

सोच मत, साकार कर
अपने कर्मों पर विश्वास रख
मिलेगा तुझे तेरी मेहनत का फल
किसी और का न इन्तज़ार कर।।

जो भी चले अकेले, आज हैं उनके पीछे मेले
जो कर रहे इन्तज़ार, उनकी ज़िन्दगी में है झमेले।

“

देने से कोई गरीब नहीं हुआ।

* * * * * * * * * * * * * *

कुपोषण हर जगह है। कहीं आहार कम है, कहीं संस्कार

* * * * * * * * * * * * * *

नकारात्मक लोगों से दूर रहें। उनके पास हर सामाधान के लिए एक समस्या है।

* * * * * * * * * * * * * *

सब कुछ तमाशा है, जब तक वह दूसरे के साथ हो रहा है।

”

प्रशासनिक शब्दावली
Administrative Glossary

Official	-	पदधारी
Officiating	-	स्थानापन्न
On probation	-	परिवीक्षाधीन
Optional	-	वैकल्पिक
Ordinance	-	अध्यादेश
Organization	-	संगठन
Organizer	-	आयोजक
Orientation	-	अभिविन्यास
Outstanding	-	उत्कृष्ट
Overtime allowance	-	समयोपरि भत्ता
Parliamentary	-	संसदीय
Partial	-	आंशिक
Participation	-	सहभागिता
Particulars	-	ब्योरा
Part time	-	अंशकालिक
Passport	-	पार पत्र
Patron	-	संरक्षक
Pay	-	वेतन
Payment	-	भुगतान
Pay scale	-	वेतनमान
Pensioner	-	पेन्शनभोगी
Percent	-	प्रतिशत
Performance	-	निष्पादन
Period	-	अवधि
Permanency	-	स्थायित्व
Permission	-	अनुज्ञा
Perquisites	-	अनुलब्धियाँ
Personal	-	वैयक्तिक
Personality	-	व्यक्तित्व
Personnel	-	कार्मिक
Perusal	-	अवलोकन
Political	-	राजनैतिक
Pollution	-	प्रदूषण
Postponement	-	स्थगन
Preliminary	-	प्रारंभिक
Prescribed	-	निर्धारित
Presentation	-	प्रस्तुतीकरण
Prevention	-	निवारण
Priority	-	प्राथमिकता
Privilege	-	विशेषाधिकार
Probation	-	परिवीक्षा
Proceedings	-	कार्यवाही
Proclamation	-	उद्घोषण
Procurement	-	अधिप्राप्ति
Production	-	उत्पादन
Proficiency	-	प्रवीणता
Proforma	-	प्रपत्र
Programme	-	कार्यक्रम
Progress	-	प्रगति
Progressive	-	प्रगतिशील

अंतरिक्ष शब्दावली / SPACE GLOSSARY

Vane - पंखुड़ी, पंख

Vanishing - अदृश्य होना, ओझल होना

Vapour - वाष्प, भाप

Vapour Cloud Experiment - वाष्प मेघ प्रयोग

Vapour Injection - वाष्प अंतःक्षेपण

Vapour Liquid Equilibrium - वाष्प-द्रव साम्यावस्था

Vapour Pressure - वाष्प दाब

Vapour Rate - वाष्प दर

Vapour Refrigeration - वाष्प प्रशीतन

Vapourization - वाष्पन

Vapourizer - वाष्पित्र

Varactor - चर प्रतिघातक, चर घातक, वैरैक्टर

Variability - परिवर्तनशीलता

Variable - चर, परिवर्ती

Variable Driver - परिवर्ती परिचालक

Variable Field Length - चर क्षेत्र लंबाई

Variable Format - परिवर्ती फॉर्मेट, चर फॉर्मेट

Variable Frequency Oscillator - परिवर्ती आवृत्ति दोलित्र, चरावृत्ति दोलित्र

Variable Rate Technology - यथोचित दर तकनीक, वेरिएबल रेट टेक्नॉलजी, बदल दर तकनीक

Variable Slope Delta - चर प्रवणता डेल्टा

Variable Star - चरकांति तारा, परिवर्तनशील तारा

Variable Thrust - परिवर्ती प्रणोद

Variable Thrust Rocket - परिवर्ती प्रणोद रॉकेट

Variable Thrust Rocket Power Plant - परिवर्ती प्रणोद रॉकेट, शक्ति संयंत्र

Variance - प्रसरण

Waveguide - तरंग पथ निर्धारित्र

Weathering - अपक्षयण

Webbing - जालन

Weight Ratio - भार अनुपात

Welding - झालना

Width - चौड़ाई

Wind Tunnel - वात सुरंग

Winding - कुंडलन

Yawing - पार्श्ववर्तन

Yielding - पराभवन

Zero Gravity - शून्य गुरुत्व

Zodiac - राशिचक्र

Zonation - क्षेत्रीकरण

जगरूप
वैज्ञा/इंजीनियर-एसएफ,
एसआर

पेयजल: भविष्य की गंभीर समस्या

जल जीवन का आधार है, फिर चाहे मनुष्य हो, पशु-पक्षी या पेड़-पौधे, बिना जल के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यही कारण है कि कहीं सुदूर ग्रह पर भी अगर जीवन की संभावनाएं तलाशी जाती हैं तो सबसे पहले वहाँ जल की उपस्थिति का पता लगाया जाता है। यूं तो हमारी पृथ्वी पर लगभग सतर प्रतिशत जल का भंडार है परंतु इसमें प्रयोग करने योग्य कुछ ही प्रतिशत जो कि मुख्यतया भूजल, तालाबों, नदियों व ग्लेशियर में हैं। औद्योगीकरण और आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य प्रयोग करने योग्य जल का इस तरह दोहन कर रहा है जिससे भूजल का स्तर बुरी तरह प्रभावित हुआ है और बहुत सारे भूभागों में भूजल तीन सौ-चार सौ फीट तक चला गया है। हाल ही में बैंगलूर में हुए भंयकर जल संकट, जहाँ लगभग पचास हज़ार बोरवेलों में पानी सूख गया था, इसका एक ताज़ा उदाहरण है जो कि सबके लिए एक सबक की तरह है। इसके अलावा बढ़ते औद्योगीकरण और उनके अपर्याप्त जल संशोधन के कारण आस-पास के तालाबों का पानी प्रभावित हुआ है जिसका उदाहरण गंगा नदी के किनारे बने उद्योगों द्वारा असंशोधित जल गंगा नदी में मिलाने के कारण गंगा नदी में जल प्रदूषण बहुत अधिक बढ़ा है। याद रहे गंगा नदी भी हमारे बहुत बड़े भू-भाग के लिए एक जीवन रेखा की तरह है और इसके प्रदूषण से उस हिस्से में पेयजल और सिंचाई की बहुत बड़ी समस्या पैर पसारे खड़ी है। इसलिए भारत सरकार ने गंगा की सफाई के लिए 'नमामि गंगे' नामक प्रोजेक्ट शुरू किया हुआ है। वहीं दूसरी ओर वैश्विक गर्मी 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण हमारे ग्लेशियर सिमट रहे हैं जो कि हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों का स्रोत है। इसका अर्थ यह है कि भविष्य में हमारी नदियां सूख जाएंगी। अतः यह समय सभी को मिलकर एक गंभीर चिंतन करने का है कि हम सभी मिलकर जल का सदुपयोग करें ताकि आने वाली पीढ़ियां एक खुशहाल जीवन जी पाएं।

षीजा जोय
वरि. सहायक, पीजीए, वीकेसी

हमारी संस्कृति

'अनेकता में एकता' भारतीय संस्कृति का दूसरा नाम कहना ही सही होगा। 28 राज्यों और 8 संघ शासित प्रदेशों में 150 करोड़ की जनसंख्या से भरपूर भारत प्राचीन में सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। भारत की प्राकृतिक सुंदरता उसकी हरी भरी वादियां, नदियां, पहाड़ों की माला, तटीय प्रदेश, वन आदि से उजागर होती थी। इसके अलावा हीरे जवाहरातों, सोने से लदी, राजमहलों की नक्काशी, बनावट लोगों को आकर्षित करती रही है।

भारत एक प्राचीन देश है, जिसने अपनी पुरानी पहचान को मिटाए बगैर ही नवीनता को अपनाया है। सबसे ज़्यादा भाषाएं बोली जाने वाली एक ही जगह इस विश्व में है और वह भारत है। भारत के हर एक राज्य में कई तरह ही भाषाएं, रीति रिवाज़, त्योहार, संस्कार हैं, जो अन्य राज्यों से अलग होकर भी एकत्व को दर्शाते हैं। जैसे फसल काटने का त्योहार हरियाणा में लोहड़ी के नाम से जाना जाता है, तो केरल में ओणम के नाम से। लोहड़ी में आग के चारों और नृत्य करके खुशी मनाई जाती है तो ओणम में फूलों की रंगोली सजाकर नृत्य किया जाता है। जीवन के हर एक बदलाव को, मौसम के हर एक बदलाव को तीज व त्योहारों के साथ स्वागत करते हैं। त्योहारों का मनाना इस बात को प्रदर्शित करता है कि कोई भी खुशी अकेले नहीं मनाई जाती, बल्कि भाई-बंधु, पास-पड़ोसी के साथ मिलजुलकर मनाई जाती है। भारत ही ऐसा देश होगा जहाँ बच्चे के जन्म से लेकर मनुष्य के मरने तक हर पड़ाव को पारंपरिक रीति के अनुसार संभाला जाता है, चाहे मानव किसी भी धर्म को क्यों ना मानता हो। फसल के बोने से लेकर काटने तक, हर समय रीतियों का पालन करते रहते हैं।

तीज त्योहार ही नहीं बल्कि भारतीयों के संस्कार भी सर्वश्रेष्ठ हैं। परिवार को यहाँ मुख्य स्थान दिया जाता है। एक व्यक्ति की परिभाषा उसके परिवार से शुरू होती है। परिवार में माता-पिता से लेकर बच्चों तक सभी का अपना-अपना दर्जा होता है। पत्नी के लिए उसका पति ही ईश्वर होता है और पति के लिए पत्नी उसका आधा शरीर। इसी विचारधारा के कारण भारत में तलाकों की संख्या अन्य देशों के मुकाबले में अभी तक कम है।

भारतीय परिवारों में पिता या पुरुष को कुटुंब के नाथ के रूप में देखा व माना जाता है। इसलिए परिवार का हर एक निर्णय कुटुंब की अनुमति के बगैर न लिया जाता। यह बात काफी हद तक गलतियों को रोकती है व रिश्तों को टूटने से बचाती है। परिवार में बड़े जनों का आदर करना प्रारंभ से ही बच्चों को सिखाया जाता है। "माता पिता गुरु देवो भव" अर्थात् माता-पिता और गुरु भगवान समान हैं। एक भारतीय मूल रूप से अपने परिवार से जुड़ा रहता है और उसकी संवेदनाएँ जागृत रहती हैं। स्नेह. करुणा, दया के भाव उसमें उजागर रहते हैं। यह हमारी भारतीय संस्कृति के कारण ही है।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत के योगदान को कोई ठुकरा नहीं सकता। नाड़ी उपचार और आयुर्वेद भारत की ही देन हैं। हमारे पर्यावरण एवं प्रकृति से मानव रोग उपचार की विधि ही आयुर्वेद है। आज भी हम कई रोगों के उपचार के लिए पारंपरिक रीतियों पर ही निर्भर रहते हैं, जैसे पंचकर्म चिकित्सा। वास्तु शास्त्र भी भारतीय संस्कृति का एक अनन्य हिस्सा है, जहाँ स्थान एवं समय के आधार पर एक घर या इमारत के निर्माण की रीति का निर्णय लिया जाता है। चाहे कोई किसी भी प्रांत से क्यों ना हो, घर की नींव रखने से पहले वास्तु ज़रूर देखेगा।

भारतीय संस्कृति मानव के विकास में बेड़ियां डालकर उसके अंधविश्वास को बढ़ाने के लिए नहीं, परंतु मानव विकास में उसके साथ रहने के लिए है। भारत की संस्कृति एक अमूल्य धरोहर है जिसे आज तक हमारे पूर्वजों ने संभालकर अपनी आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाया है। भारत का अस्तित्व उसकी संस्कृति के कारण ही है। नई पीढ़ियां नवीनीकरण के चक्कर में अपनी संस्कृति को भूली जैसी प्रतीत होने लगी हैं। विश्व में भारत का स्थान उच्च बनाए रखने के लिए हमें अपनी संस्कृति को संभालकर रखना ही होगा।

अर्थ

लेनिना एम एस
तकनीकी अधिकारी,
आईएसआरई

मैडमजी आपको घर नहीं जाना है, क्या? हेमा की आवाज़ सुनकर मैं चिंता से बाहर आई। आज तो जल्दी जानेवाली थी। घर में पार्टी जो रखी थी। सब लोग बोलते हैं कि राधिका मैडम समय की बहुत पक्की हैं। आज हेमा सोची होगी कि आज मैडम को क्या हुआ? मुझपर क्या बीत रही है वह मैं ही जानूं।

आज कार भी नहीं लाई। मन ठीक नहीं तो चलाना भी मुश्किल होगा। बस में बैठते-बैठते सोच में गुम हो गई।

बचपन से ही सबकी लाड़ली थी मैं। पढ़ाई में, कला और खेल प्रतियोगिताओं में सब में अव्वल नंबर। बचपन से ही यही लक्ष्य था कि बड़ी होकर कवयित्री बनूं। इसी तरह सब कुछ अपने हिसाब से हो रहा था। कठिनाइयां तब आईं जब शादी की बात आई।

माँ और पिताजी को कुंडली पर बहुत विश्वास था। इसलिए बी.ए के बाद तुरंत ही शादी की तैयारी करने लगे। जो दोष मेरी कुंडली में है उसके अनुरूप वर मिलना बहुत मुश्किल था। बहुत ही कोशिश की, और फिर राजू का रिश्ता आया।

राजू आय विभाग में काम करते हैं। शादी के समय क्लर्क थे, अभी प्रमोशन की बात बोल रहे थे। हमेशा ऐसा लगता था कि हम दोनों अलग-अलग दुनिया में रहते हैं। आर्थिक कार्यों में राजू को कोई रुचि नहीं थी। बोलते थे कि तुम मुझसे कमाती है तो घर चलाना और खर्च करना सब कुछ तुमको भी संभालना होगा। जो पैसा चाहिए वह मुझसे ले लेना। कमाने से याद आई, जब शादी हुई तो मैंने बी.ए ही की थी। शादी के बाद मैंने यह फैसला किया कि आगे पढ़ूंगी और मेरा लक्ष्य जो है उसको हासिल करूँगी। पहले राजू के माँ-बाप और भाई-बहनों को यह बात अच्छी नहीं लगी। वे बोले परिवार में बच्चे होना ज़रूरी है। काम नहीं, पढ़ाई नहीं।

हमने सब कुछ उसके अर्थ में ही समझा। राजू से कहा कि माँ-बाप की देखभाल में मैं कुछ कमी नहीं छोड़ूंगी। घर का सारा काम मैं ही संभालूंगी, मुझको पढ़ने दो। राजू मान गए-पूरा मन नहीं था, फिर भी।

मैंने पी.एच.डी. तक हासिल की और कॉलेज में हिंदी विभाग में अब निदेशक हूँ। 42 साल की उम्र में। इनके बीच हम लोगों को दो बच्चे भी हुए। शानी, पहली वाली अब इंजीनियरिंग कर रही है और रेखा, दूसरीवाली, अब दसवीं दर्जा में है।

जीवन ऐसे ही अच्छी तरह से गुज़र रहा था कि एक दिन राजू ने मुझसे कहा "राधिका, कोई औरत है जो तुमसे मिलना चाहती है और मेरे-हमारे बारे में कुछ कहना चाहती है।"

मैंने सोचा कि वह मेरी

कुछ आराधिका होगी जो मेरी किताब पढ़ती है। हाँ, अब मैं साहित्य लेखन वगैरह भी करती हूँ और लोग मुझे पहचानते भी हैं।

कोई बात नहीं, मैं मिल लूंगी उससे मैंने कहा। किधर जाना है?, मैंने पूछा। राजू ने बताया कि वह आएगी, मुझे जाने की ज़रूरत नहीं। बाहर है घर के। मैं आश्चर्य भाव से राजू को देखा। ऐसा लगा कि बादल घने हैं उसके चेहरे पर और मन में।

वह आई, नाम है 'इंदु'। बच्चों को संगीत सिखाती है। अपना एक स्कूल है और अकेली है। माँ-बाप गुज़र गए थे और उसकी शादी भी एक दुर्घटना थी। पति एक मानसिक रोगी था और बहुत ही मुश्किल से उससे छुटकारा पाया।

इतना सब कुछ बताकर इंदु चुप रही। मैंने पूछा बाकी भी बोलो। बाकी राजू ने बताया कि वे दोनों मेट्रो में साथ जाते थे। पहले दोस्त थे। फिर कब रिश्ता इतना गहरा हो गया पता ही नहीं चला। अभी इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि आगे की ज़िंदगी साथ गुज़ारना है। तुम तो समझदार हो। हमसे ज़्यादा पढ़ी हो। समझने की कोशिश करो।

एक पल के लिए हम चुप रहे और पूछे – राजू हमारी ज़िंदगी में क्या कमी थी?

राजू ने कहा, कमी? हमारी ज़िंदगी में सब कुछ ज़्यादा था। तू हमेशा मेरा ख्याल रखची थी। कभी मुझसे नहीं लड़ती थी। घर का सारा काम, यहाँ तक कि मेरे माँ-बाप की देखभाल भी, तुम ही करती थी।

एक जीवन में सब कुछ होना चाहिए। खुशी-गम, आशा-निराशा सब कुछ। मुझे ऐसा लगता था कि कुंडली के कारण ही हम दोनों की शादी हो गई। मुझको हमेशा ऐसा लगता था कि तुम अगर मेरे साथ नहीं होती तो तुम्हारे लिए और भी बड़ी दुनिया होती।

मैं बोली- राजू, इतने सालों के बाद तुमको ये सब कहने की हिम्मत मिली ठीक है। और बच्चों के बारे में सोचा है क्या?

राजू बोले- इसलिए तुम्हारी मदद चाहिए।

अभी उस बात के बीते तीन महीने हो गए। मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि राजू को उसका जीवन अपनी तरह जीने का पूरा हक है। इसलिए आज पार्टी रखी है। सब लोग होंगे। मेरे माँ-बाप, उनके माँ-बाप, भाई-बहन, हमारे बच्चे - सब। शादी में भी सब लोग थे ना, बच्चों के सिवा। बच्चे हम दोनों के हैं, वही रहेंगे।

जीवन का नया अर्थ अभी खोजना है मुझे।

बहुत कुछ करना बाकी है।

सबसे बड़ा सच ज़िंदगी है। यही अर्थ समझना है और आगे जाना है।

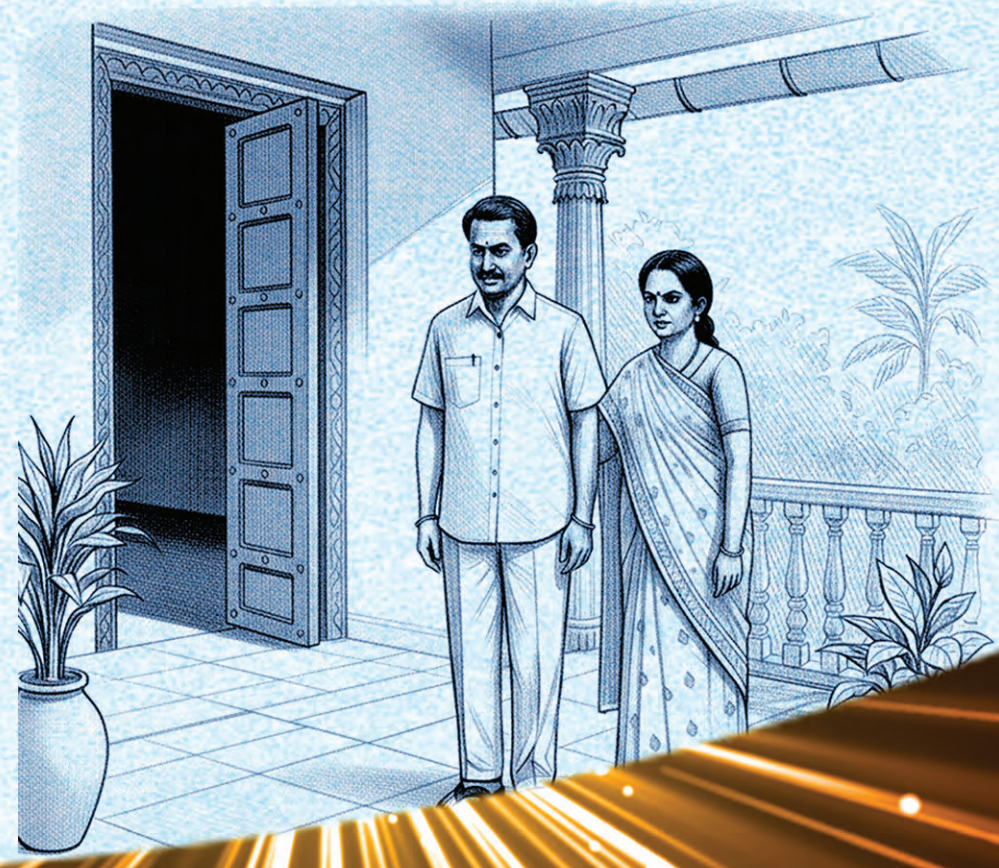

सोनिया गुप्ता
गिरराज गुप्ता की पत्नी

ऑन-लाइन खरीदारी

वर्तमान में हम डिजिटल युग में जी रहे हैं। आज के समय में प्रौद्योगिकी ने बहुत तरक्की कर ली है। लोग ज़मीन से अंतरिक्ष में पहुंच गए हैं।

आज के समय में इन्टरनेट ने इतनी तरक्की कर ली है कि लोगों के लिए हर तरह की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इन्टरनेट ने आज हर प्रकार के काम को आसान बना दिया है उसका एक प्रकार है खरीदारी। आज हर प्रकार के सामान आप ऑन-लाइन खरीद सकते हैं, चाहे वह कपड़ों की खरीदारी हो या खाने-पीने के सामान की या इलेक्ट्रॉनिक्स सामान की। उसके लिए बाज़ार में जाकर सर्वे नहीं करना पड़ता और हम घर बैठकर ही आसानी से चीज़ों को खरीद सकते हैं। आज इन्टरनेट पर कई सारी ऑन-लाइन शॉपिंग के लिए साइट्स उपलब्ध हैं. जैसे फिलपकार्ट, आमेज़ोन, जिओमार्ट, मीशो आदि जिन पर हर प्रकार का सामान मिल जाता है।

जैसे हर किसी चीज़ के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव होते हैं वैसे ही ऑन-लाइन शॉपिंग के भी होते हैं।

सकारात्मक प्रभावः-

1. ऑन-लाइन शॉपिंग में समय की बहुत बचत होती है क्योंकि बाज़ार जाकर शॉपिंग करने में घंटों का समय लगता है।
2. ऑन-लाइन खरीदारी में पैसों की भी बहुत बचत होती है क्योंकि ऑन-लाइन साइट्स वाले कई तरह के ऑफर देते हैं, जो कि बाज़ार में दुकानदार बहुत कम देते हैं।
3. ऑन-लाइन खरीदारी में चीज़ें पसंद ना आने पर आसानी से वापस भी हो जाती है।
4. ऐसे लोग जो बाज़ार में जाकर सामान खरीदने में असमर्थ हैं और घर में अकेले रहते हैं, जैसे कि बड़े बुज़ुर्ग, उनके लिए ऑन-लाइन खरीदारी एक वरदान जैसा है कि उन्हें सामान खरीदने के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।
5. ऐसे लोग जो दूर-दराज़ इलाकों में रहते हैं या गांव में रहते हैं जहां हर प्रकार का सामान नहीं मिल पाता है, ऐसे लोगों के लिए ऑन-लाइन खरीदारी एक आसान तरीका है।
6. बाज़ार में खरीदारी करने में हमें कई दूकानों पर जा-जाकर उस चीज़ का सर्वे करना पड़ता है।, जबकि ऑन-लाइन खरीदारी में हम घर बैठकर ही अलग-अलग साइट्स पर जाकर उस चीज़ का सर्वे कर सकते हैं।

नकारात्मक प्रभावः-

1. ऑन-लाइन खरीदारी में हम केवल चीज़ों के चित्र देख सकते और जानकारी पढ़ सकते हैं और उसी के आधार पर हमें चीज़ों को खरीदना पड़ता है। चूंकि कुछ कंपनियाँ सामान देने के बाद वापस नहीं लेती है जिससे हमारे पैसों का भी नुकसान हो जाता है।
2. ऑन-लाइन खरीदारी के कारण अब लोग आपस में समय कम व्यतीत करते हैं। पहले अगर बाज़ार से कोई भी सामान खरीदना होता था तो परिवार के सभी लोग जाने के लिए उत्साहित हो जाते थे क्योंकि बाज़ार से सामान खरीदना एक बहाना होता था एक साथ परिवार के साथ समय व्यतीत

करने का।

3. ऑन-लाइन खरीदारी ने एक तरह से लोकल दूकानदारों को बेरोज़गार सा बना दिया है, जिससे उनकी आमदनी भी अच्छे से नहीं हो पाती है। इससे देश की अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। क्योंकि विदेशी कंपनियाँ ऑन-लाइन कम कीमत पर सामान बेचकर लोगों को दे रही है।
4. बाज़ार से खरीदारी करने पर हम चीज़ों को देख परख कर खरीद सकते हैं। पर कभी-कभी ऑन-लाइन सामान खरीदने में चीज़ें इतनी खराब गुणवत्ती की होती हैं कि हम उन्हें वापस भी नहीं कर पाते हैं।

ऑन-लाइन खरीदारी ने आज चीज़ों को खरीदना इतना आसान बना दिया है कि हमारे समय और पैसे दोनों की बचत होती है। लेकिन हमें कभी किसी एक चीज़ पर पूरी तरह से निर्भर नहीं रहना चाहिए और बाज़ार जाकर भी खरीदारी करनी चाहिए जिससे स्थानीय दूकानदारों का भी उत्साह बढ़ता है और हमें अपने परिवार के लोगों के साथ समय व्यतीत करने का मौका भी मिलता है।

रागिणी गुप्ता
गिरराज गुप्ता की सुपुत्री

जहाँ चाह, वहाँ राह,

यह कहानी मेरी सहेली दिव्या की है जो कि एक मध्यवर्गीयम परिवार से है और मेरी बहुत अच्छी दोस्त है। यह बात उस समय की है जब हम नौवीं कक्षा में पढ़ते थे। दिव्या के परिवार में उसकी माँ, पापा, छोटा भाई और दादी रहती हैं। दिव्या के पापा की आमदनी से घर का खर्चा पूरा नहीं हो पाता था। इसलिए दिव्या की माँ एक स्कूल में पढ़ाती थीं। दिव्या के पापा का स्वास्थ कुछ ठीक नहीं था और एक दिन उसके पापा की मृत्यु हो गई। अब घर की सारी ज़िम्मेदारी उसकी माँ के ऊपर आ गई। दिव्या ने देखा की उसकी माँ सारी ज़िम्मेदारी एक साथ पूरी नहीं कर पा रही हैं तो उसने सोचा कि वह अपनी माँ की मदद करे। दिव्या के पापा की मृत्यु के बाद दिव्या ने कम उम्र में ही अपनी ज़िम्मेदारी समझी। वह सोचने लगी कि कैसे अपनी माँ की मदद की जाए ताकि उसके परिवार की भी मदद हो जाए और उसकी पढ़ाई में कोई परेशानी नहीं आए। उसने सोचा की वह शाम को दो घंटे ट्यूशन क्लास ले। दिव्या पढ़ाई में बहुत होशियार थी और यह बात पूरे मोहल्ले को पता था तो वहाँ के लोग भी अपने बच्चों को ट्यूशन क्लास के लिए दिव्या के पास भेजते थे। धीरे-धीरे दिव्या के ट्यूशन क्लास अच्छे चलने लगे और उसकी माँ की भी मदद हो रही थी।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि कोई चीज़ करने के लिए हमें आत्मविश्वास और मेहनत की आवश्यकता होती है। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, अगर हमें किसी भी चीज़ की चाहत है तो उसके लिए रास्ता हमें मिल ही जाता है। यानी इसका यह मतलब है:- जहाँ चाह, वहाँ राह!

प्रकाश वी पी
वरि. सहायक, पीजीए
वीकेसी

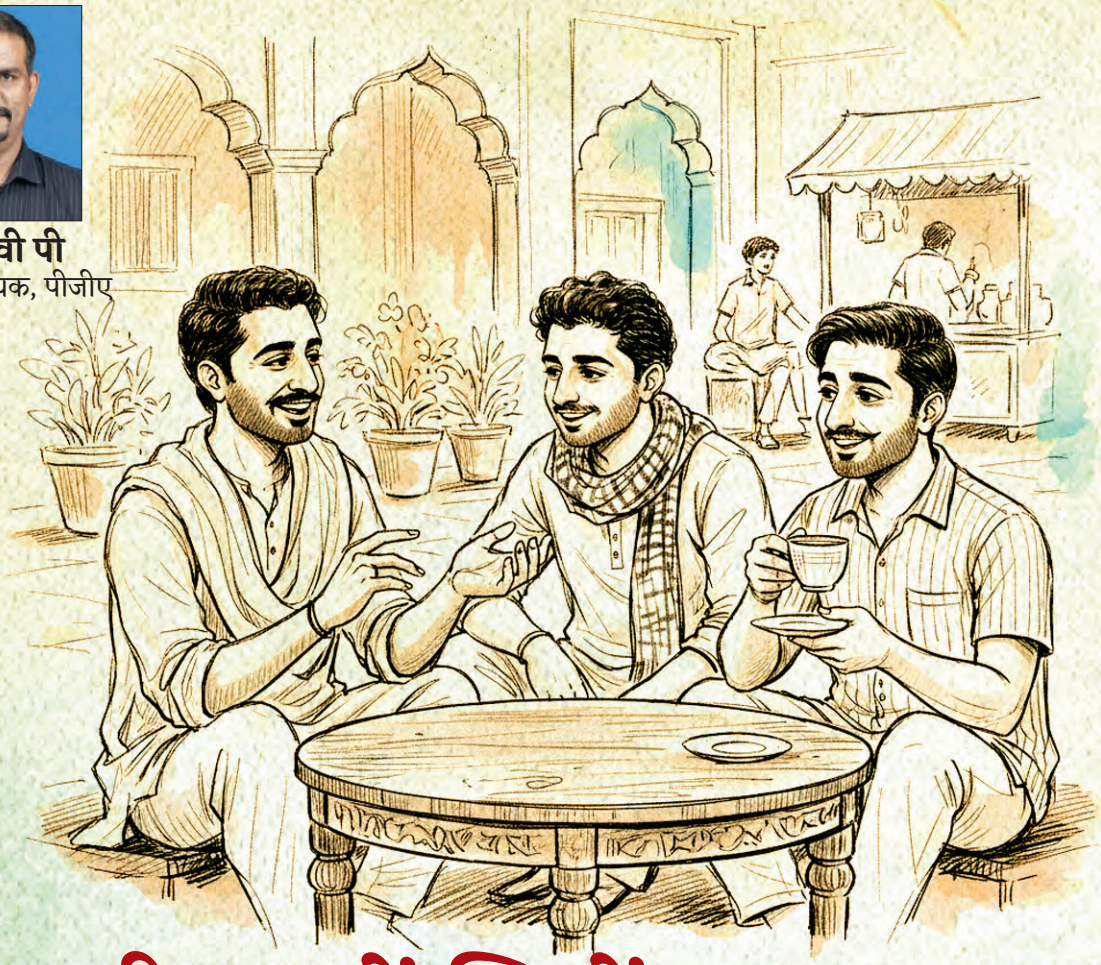

जीवन में मित्रों का महत्व

परिचयः

हमारी सृष्टि का निर्माण पंच तत्वों से हुआ है- भू, अग्नि, जल, गगन व समीर। सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक सत्व - जीवित या मृत - परस्पर सहभागिता द्वारा अपने अस्तित्व को कायम रखता है। जीव-जगत में जीवन-यापन की इस कला को मित्रता की संज्ञा दी जा सकती है। मित्र, अर्थात् सखा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सदैव सहगामी होते हैं। मित्रता का भाव मानव जीवन में भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा प्राचीन काल से पर निर्भरता का प्रमाण देता रहा है। अपने जीवन काल के प्रत्येक पड़ाव पर भिन्न-भिन्न तत्वों द्वारा अपने हितों की सुरक्षा करता रहा है। ये तत्व ही मित्र समान है। मित्र का तात्पर्य केवल यह नहीं कि केवल स्वकार्य साधने हेतु किसी भी अन्य की मदद ली जाए। मित्र की व्यापक भूमिका, महत्व तथा विचारात्मक तथ्यों द्वारा संयोजित यह लेख मित्रता के सच्चे भाव को प्रकट करता है।

मित्र की परिभाषाः

मित्र एक संज्ञा नहीं भाव है। परोपकार का भाव। मित्र तथा संवेदना में गहरा संबंध है। चूंकि संवेदनाएं किसी के जीवन में प्राण का प्रमाण होती हैं। इसलिए जीवन में मित्रों की मुख्य भूमिका होती है। कोई भी भाषा मित्र की परिभाषा नहीं गढ़ सकती है। कई बार तो मित्रता मूक होती है किंतु इसका गुंजन दसीं दिशाओं में प्रतिध्वनि पैदा करता है। मित्र ही एक ऐसा संबंधी है जो सब कुछ है- माता, पिता, बंधु या गुरु। अर्थात् मित्र निराकार हूँ। जीवन में इस निराकार को स्वीकार करके सभी विकार दूर किए जा सकते हैं। केवल आवश्यकता है, सच्चे मित्र के चयन व पहचान की।

मित्रों की भूमिकाः

हमारे जीवन में मित्रों के योगदान का अभाव नहीं है। भारत की संस्कृति में सच्ची मित्रता के कतिपय उदाहरण विद्यमान हैं। कृष्ण और सुदामा की मित्रता की मिसाल तो सभी देते हैं।

जीवन के प्रथम चरण, अर्थात् शैशव काल, से ही प्रथम मित्र के रूप में माँ पालन पोषण करती है। तत्पश्चात् अन्य क्रीड़ा के साधन मित्र का रूप होते हैं। आयु बढ़ने पर मित्र बदल जाते हैं। परंतु सच्ची मित्रता पहचान में नहीं आती। विषय, वस्तु, व्यक्ति, स्थिति या परिस्थिति कुछ भी हो मित्र के रूप में कार्य करते हैं। ये ही जीवन की मार्गदर्शिका बनती है। जीवन में प्राप्त उपलब्धियां अतीत तथा वर्तमान के मित्र के प्रकार पर निर्भर होती हैं। काया की मामा मित्रता नहीं, अपितु मित्र जाल है। यहां केवल अपने कार्य ही साधा जाता है। स्वार्थ नहीं अपितु परोपकार ही मित्र का पर्याय बनता है।

सच्चे मित्र सन्मार्ग दिखाते हैं। अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। स्वयं को क्षति में डालकर भी अपने मित्र की रक्षा करते हैं। सच्ची मित्रता की सीमा नहीं होती, संयम होता है। इसलिए यह जीवन को संयमित बनाती है। सच्चा मित्र कभी मदद नहीं करता बल्कि हमको मदद करने योग्य बनाता है।

मित्र तथा आधुनिकताः

आधुनिकता की दौड़ में मित्रता की परिभाषा बदल गई है। आज मनुष्य अकेला हो चुका है। संस्कृति तथा सभ्यता के बदलने के साथ-साथ मित्रता भी धूमिल हो गई है। आज मनुष्य स्वार्थ भाव से ओत-प्रोत हैं। "मुँह में राम बगल में छुरी" जैसी कहावतें आज के दृष्टिकोण से सटीक बैठती हैं। विकास के नाम पर विनाश हो रहा है। विश्व के कई देश शत्रुता का परिचय देते हुए अपनी ही धरा के संसधानों का विनाश कर रहे हैं। सभी मुद्दों को ध्यान में रखते हुए मेरे दृष्टिकोण से मनुष्य के जीवन में उसका सबसे सच्चा मित्र होता है- उसकी सुबुद्धि, विवेक, धैर्य तथा नैतिक मूल्य।

नीति का ज्ञान तथा उससे मित्रता सभी प्रकार की मित्रता से भिन्न तथा उत्तम है। यह स्वयं समाज, देश तथा प्रकृति के कल्याण का ही गुणगान करता है। नीतिज्ञ सदैव परोपकार, आत्मीयता तथा सच्चे मित्र धर्म का पालन करता है। अपने में अपना अनुशासन ही अनवरत मित्रता की परिभाषा है।

मित्रता की मौलिक पहचान जीवन को उन्नति या अवन्नति की ओर ले जाती है। सामान्य रूप से हमारा परिवेश ही चरित्र निर्माण के लिए ज़िम्मेदार होता है। इस परिवेश में निहित सभी तत्व हमारे मित्र हैं। ये जीवन को संवारने या बिगाड़ने में भूमिका निभाते हैं।

एक छात्र के लिए उसका सर्वोत्तम मित्र होता है- उसकी पुस्तकें। गुरु के मार्गदर्शन तथा पुस्तकों के ज्ञान को अर्जित कर छात्र अपने जीवन को सफल बनाता है। मित्रता में मित्र धर्म का निर्वहन परस्पर होना आवश्यक नहीं। उदाहरणतः प्रकृति हमारी मित्र है। परंतु हम प्रकृति के लिए कुछ नहीं करते। इस प्रकार मित्रता की सटीक परिभाषा तथा महत्व सदैव तर्कपूर्ण हैं।

निष्कर्षः-

मनुष्य जीवन के संदर्भ में मनुष्य का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए मनुष्यता के कल्याण की भावना। सौहार्दम, आत्मीयता सुगुणों वाला व्यक्तित्व एक मात्र सच्ची मित्रता से ही सुगठित हो सकता है। अतएव जीवन में मित्रों का महत्व तो है, परंतु इस भाव को निखारना केवल मनुष्य के हाथ में ही है। आधुनिक युग में मित्रता में प्रासंगिकता को बरकरार रखते हुए अपने कार्यों, पद्धतियों तथा प्रवृत्तियों में उचित परिवर्तन कर हम अपने जीवन तथा मित्र रूपी प्रकृति को सहज व सुलभ बना सकते हैं।

अंत में मैं चार पंक्तियों द्वारा अपने विचार समाप्त करना चाहूंगा।

जीवन महके इत्र इत्र
सुदृढ़ बने चरित्र
तन मन जीवन बने पवित्र
मिले जब एक सच्चा मित्र।

छोटे मामलों में दिमाग पर भरोसा रखें,
बड़े मामलों में दिल पर।

सिगमंड फ्राइड

बेटी की सूझ-बूझ

प्रेम प्रकाश
तकनीकी अधिकारी-सी
एसआर

एक ग्रामीण इलाके में बलदेव नामक एक किसान रहता था। कुछ माह पूर्व बलदेव ने खेती-बाड़ी करने के लिए अपने गांव के ही एक सेठ से कर्ज पर पैसे लिए थे। अच्छी फसल की कटाई के बाद वह सेठ को पैसे वापस करनेवाला था। परंतु दुर्भाग्यवश अतिवृष्टि के कारण पूरी फसल खराब हो गई।

जब सेठ ने उधार लिए पैसे ब्याज समेत मांगा तो किसान ने अपनी स्थिति बताई। परंतु सेठ बड़ा निर्दयी था और उसने किसान को एक माह का अतिरिक्त समय दिया।

किसान को एक बड़ी सुंदर और नौजवान बेटी थी। कर्ज के बोझ तले किसान ने सारी बात अपनी बेटी को बताई। बेटी ने अपने पिता को चिंतामुक्त रहने को कहा। उसने अपने पिता को शांति से सोचने को और कर्ज वापसी का हल निकालने को कहा।

एक माह निकल चुका था और सेठ वापस अपने पैसे मांगने आया। उसने देखा कि किसान की बेटी बहुत सुंदर है। उसने झट से कहा, "यदि बलदेव अपनी पुत्री का विवाह मुझसे करा दे तो वह उसका पूरा ऋण माफ कर देगा।"

बलदेव अब और भी परेशान हो गया। वह अधेड़ उम्र का मोटा आदमी था तो कैसे अपनी पुत्री का विवाह उससे करा सकता था। उसने पूरी बात अपनी पुत्री को बताई। बलदेव की बेटी के पास अब दो ही उपाय बचे थे। सेठ से विवाह करके अपने पापा का ऋण माफ करा दे या विवाह से मना करके अपने पिता की बुरी स्थिति बनी रहने दे।

किंतु बलदेव की पुत्री ने हार नहीं मानी। उसने कुछ सोचा और अगले दिन ही सेठ को अपने घर बुलवा लिया। सेठ इधर सुंदर कन्या से शादी के सपने देख रहा था। वह अगले दिन ही किसान बलदेव के घर पहुँचा और तुरंत उसकी बेटी से पूछ बैठा,"क्या, तुम विवाह के लिए तैयार हो?" बलदेव की पुत्री ने सेठ के समक्ष एक शर्त रखी। उसने सेठ से कहा कि सेठ एक बैग लेकर आए जिसमें दो छोटी गेंदें रखें- एक लाल रंग की और दूसरी सफेद।

लड़की आंख मूंदकर बैग से एक गेंद निकालेगी। यदि गेंद लाल हुई तो वह सेठ से विवाह करेगी और ऋण भी माफ किया जाएगा। परंतु यदि गेंद सफेद हुई तो न तो वह विवाह करेगी और साथ ही ऋण माफी भी मिलेगी।

शादी के सपने देखते हुए सेठ ने एक पल के लिए सोचा और शर्त मान गया। उसने झट से एक बैग निकाला और उसमें गेंद डालने लगा। सेठ ने कुटिलता दिखाई और चुपके से दोनों गेंदें लाल रंग की ही डाल दी। ऐसा करते बलदेव की बेटी ने सेठ को देख लिया था। बेटी ने सोचा यदि मैं इसका भांडा फोड़ दूं तो यह निर्दयी, अधेड़ उम्र का सेठ फिर किसी न किसी दूसरे जाल में मुझे फंसाएगा। अतः वह शांत रही। शर्त के अनुसार अपनी आंखे बंद कर उसने कुछ सोचा और बैग में हाथ डाले और हाथ बाहर निकालते ही उसने गेंद घटका कर पास के एक गटर में पहुँचा दिए। सेठ जल्दी से गटर के पास गया पर वह गेंद न मिल सकी।

बलदेव की पुत्री ने सेठ से क्षमा मांगते हुए कहा, "चिंता क्यों करते हो सेठ! अभी भी एक गेंद बैग में बची है। यदि बैग में लाल गेंद बची होगी तो मैंने सफेद निकाली होगी जो गटर में खो चुकी है। किंतु यदि बैग में सफेद गेंद होगी तो मैंने लाल निकाली होगी।"

तदुपरांत बलदेव ने उत्सुकता और भय के साथ बैग को खोला। उसमें से लाल रंग की एक गेंद बाहर निकाली। इसका अर्थ यह हुआ कि लड़की ने सफेद रंग की गेंद निकाली थी जो गलती से गटर में खो गई।

बलदेव की जान में जान आ गई। इधर सेठ मूक सा वहीं ज़मीन पर बैठ गया। यदि वह मुंह खोलता तो चोर कहलाता। इस प्रकार की बुरी नीयत व धूर्तता के कारण उसे किसान बलदेव का ऋण माफ करना पड़ा।

बलदेव की पुत्री ने सूझ-बूझ से अपने पिता को कर्ज से तथा स्वयं को उस अधेड़ सेठ से मुक्त करा लिया।

<u>शिक्षाः</u> इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि धैर्य तथा विवेक से हम विकट परिस्थिति में भी गंभीर समस्याओं से उबर सकते हैं। हमें अपने दिमाग को जल की भांति निर्मल तथा गतिशील बनाए रखना चाहिए। शांत मन तथा सूझ-बूझ से हम ठीक उसी प्रकार किसी समस्या का समाधान ढूंढ सकते हैं, जिस प्रकार पानी अपना मार्ग कहीं से भी निकाल लेता है। यदि किसी समस्या का समाधान ना मिले तो गंभीर चिंतन व भिन्न सोच से कुछ न कुछ उपाय मिल ही जाता है। सदैव प्रसन्न रहें, चिंतामुक्त रहें और विवेक का प्रयोग करें।

1. अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस कब मनाया जाता है?
2. राष्ट्रीय शहीद दिवस किसकी पुण्यतिथि है?
3. अबलटोफोबिया किसका डर है?
4. विख्यात फिल्म मदर इंडिया का निदेशक कौन?
5. मधुबनी कला का संबंध किस राज्य से है?
6. भारत में इंजीनियरों का दिन कब मनाया जाता है?
7. गैरी सोबर्स किस देश के लिए खेलता था?
8. शेक्सपियर के किस नाटक में एरियल नामक पात्र है?
9. साइबर सुरक्षा जागरूकता माह कब मनाया जाता है?
10. किस शहर का पुराना नाम है भाग्यनगर?

उत्तर

1. 21 फरवरी
2. गांधीजी
3. नहाने, धोने या सफाई करने का
4. मेहबूब खान
5. बिहार
6. 15 सितंबर
7. वेस्ट इंडीज
8. द टेम्पेस्ट
9. अक्टूबर
10. हैदराबाद

हिंदी कार्यशाला - अप्रैल-जून, 2024 तिमाही

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2024,अप्रैल-जून 2024 तिमाही के लिए 18/06/2024 जून,2024 को वीकेसी के तकनीशियन-बी, तकनीशियन – डी/ ड्राफ्ट्समैन, तकनीशियन एफ/जी, तकनीकी सहायक एवं वरि. तकनीकी सहायकों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 32 सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्री शिवसुब्रह्मणि एस ,उप निदेशक एमआईएसए, ने संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्रीमती सिमी असफ, सहायक निदेशक (रा.भा), आईआईएसटी एवं श्रीमती लक्ष्मी जी सहायक निदेशक (रा.भा) का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तदुपरांत उप निदेशक महोदय श्री शिवसुब्रह्मणि, ने कार्यक्रम का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशाला से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें।

कार्यशाला में श्रीमती सिमी असफ, सहायक निदेशक (रा.भा) ने राजभाषा नीति की मुख्य बातें पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और उससे संबंधित अध्ययन सामग्रियां भी दी। श्रीमती लक्ष्मी जी ने प्रशासनिक शब्दावली और हिंदी टिप्पणियाँ पर कक्षा का संचालन किया।

अंत में सत्रांत में श्री गोविंद जी नायर एवं श्री अटावा सोमु शंकर ने कार्यशाला के आयोजन पर अपनी संतुष्टि वक्त की और सहायक निदेशक (रा.भा) एवं कार्यशाला के आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया। कुमारी कस्तूरी कनि.अनुवाद अधिकारी के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुई।

हिंदी कार्यशाला – जुलाई-सितंबर, 2024 तिमाही

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए वीकेसी में 26 सितंबर, 2024 को आईआईएसयू तथा सीएमएसई के तकनीशियन एफ,जी एवं तकनीकी सहायक के लिए एक, एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रत्येक ग्रुप से नामित 36 पदधारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य परधारियों को "प्रशासनिक शाब्दावली और हिंदी टिप्पणियां" एवं "राजभाषा नीति की मुख्य बातें" से परिचित कराना था।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती लक्ष्मी जी,सहा. निदेशक (रा.भा) ने अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रमणि एस,उप निदेशक, एमआईएसए, संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित डॉ. मायालक्ष्मी आर,सहायक प्रबंधक (रा.भा.) आरबीआई तथा श्री सोमदत्तन, भूतपूर्व सहा. निदशक (रा.भा.) आयकर विभाग तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। तदुपरांत उन्होंने अध्यक्ष महोदय से हिंदी कार्यशाला के औपचारिक उद्घाटन करने का अनुरोध किया।

उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। अपने उद्घाटन भाषण में श्री शिवसुब्रहमणि ने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी कार्यशालाओं से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें। उन्होंने सभी को प्रेरणा दी कि वे हिंदी गृह पत्रिका "अक्ष" के लिए लेख लिखें। श्रीमती लक्ष्मी जी सहा. निदेशक (रा.भा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र समाप्त हुआ।

दो सत्रों में आयोजित कार्यशाला के प्रथम सत्र का संचालन पूर्वाह्न 10.30 से अपराह्न 13.00 बजे तक किया गया। इस सत्र में डॉ. मायालक्ष्मी आर,सहायक प्रबंधक (रा.भा.) ने "राजभाषा नीति की मुख्य बातें", पर विस्तृत व्याख्यान दिया। अपराह्न 1400 से 1630 बजे तक आयोजित द्वितीय सत्र में श्री सोमदत्तन, भूतपूर्व सहा.निदशक (रा.भा.) आयकर विभाग ने "शाब्दावली और हिंदी टिप्पणियाँ" से अवगत कराया। प्रतिभागियों को दोनों सत्रों से संबंधित अध्ययन सामग्रियाँ भी दी गईं।

सत्रांत के पूर्व प्रतिभागियों ने कार्यशाला के प्रति अपनी प्रतिपुष्टि व हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि दोनों सत्र उनके लिए काफी उपयोगी रहे और साथ-साथ यह आश्वासन भी दिया कि अपने-अपने ग्रुपों में हिंदी कार्यान्वयन का समन्वयन भी करेंगे। प्रतिभागियों का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री सजीव कुमार पी के और श्री श्रीजित एस एस ने संकाय सदस्यों तथा आयोजकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के अंत में कुमारी कस्तूरी कनि.अनुवाद अधिकारी, ने प्रतिभागियों से हिंदी कार्यान्वयन के लिए वीकेसी में लागू की गई प्रोत्साहन योजनाओं से लाभान्वित होने और हिंदी कार्यान्वयन में सहयोग और समर्थन प्रदान करने का अनुरोध किया। अंत में उन्होंने अतिथि वक्ता एवं समस्त प्रतिभागियों के प्रति औपचारिक तौर पर अपना आभार व्यक्त किया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2024 की रिपोर्ट

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इसरो के वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में दिनांक 17.09.2024 से 30.10.2024 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए इस समारोह के दौरान वट्टियूरकाव कॉम्प्लेक्स (वीकेसी) में स्थित इसरो जड़त्वीय प्रणाली यूनिट (आईआईएसयू) तथा सम्मिश्र एन्टिटि (सीएमएसई) के हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों और उनके विवाहितियों एवं बच्चों के लिए अलग-अलग रूप से हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कहानी/यात्रावृत्तांत लेखन, तस्वीर क्या बोलती है? तकनीकी लेखन, गीत गायन, आशुभाषण, टिप्पण व आलेखन, प्रश्नोत्तरी एवं कवितापाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के विविहितियों एवं बच्चों के लिए हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कहानी लेखन, सुलेख, वाचन, देशभक्तिगान एवं कविता लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों, उनके विवाहितियों एवं बच्चों को नकद पुरस्कार, संबंधित कर्मचारियों के बैंक खातों में जमा किए गए। कुल 153 पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा शैक्षिक वर्ष 2022-2023 के लिए कर्मचारियों के बच्चों में से 10वीं कक्षा की अंतिम परीक्षा में हिंदी के लिए सर्वाधिक अंक प्राप्त कुमारी रूबी मरियम जैकब सुपुत्री श्री बिजोय जेकब के, वैज्ञा/इंजीनियर-एसजी, एआईएस, मास्टर अरविंद एम, सुपुत्र श्रीमती आशा ए एस, वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी को पुरस्कृत किया गया।

साथ ही 12 वीं कक्षा की अंतिम परीक्षा में हिंदी के लिए सर्वाधिक अंक प्राप्त कुमारी अनुषा के, सुपुत्री श्री बाबु के, लेखा अधिकारी, सीएमएसई लेखा अनुभाग, कुमारी अभिजा एस, सुपुत्री श्री साईमन जी, तकनीकी अधिकारी डी, एआईएस, को पुरस्कृत किया गया। सबको प्रमाण-पत्र बाद में वितरित किए जाएंगे।

हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

जागरूकता कार्यक्रम राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2024, दिनांक 25.10.2024 को वीकेसी के फोकल पॉइन्ट के सदस्यों के लिए एक राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 25 सदस्यों ने जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती लक्ष्मी जी,सहा. निदेशक (रा. भा) ने अध्यक्ष महोदय श्री शिवसुब्रमणि एस, उप निदेशक, एमआईएसए का स्वागत किया उन्होंने अपने स्वागत भाषण में हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। तदुपरांत उप निदेशक महोदय श्री शिवसुब्रमणि एस, ने जागरूकता कार्यक्रम का औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकताओं पर बल देते हुए कहा कि हमें हिंदी में किए जाने वाले सरकारी कामकाज का निष्पादन संवैधानिक दायित्व की तरह करना चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि ऐसी जागरूकता कार्यक्रम से लाभान्वित होते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करें।

जागरूकता कार्यक्रम में श्रीमती लक्ष्मी जी ने उन्होंने सभी को राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, राजभाषा संकल्प 1968 और समय समय पर राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के संबंध में जारी दिशानिर्देशों से अवगत कराया। राजभाषा नीति की मुख्य बातों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और उससे संबंधित अध्ययन सामग्रियां भी दी गईं।

अंत में सत्रांत में श्री शिवसुब्रह्मणि एस, उप निदेशक, एमआईएसए ने जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन पर अपनी संतुष्टि वक्त की और सहायक निदेशक (रा.भा) एवं जागरूकता कार्यक्रम के आयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया। कुमारी कस्तूरी कनि.अनुवाद अधिकारी के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुई।

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2024 के विजेताओं की सूची

आदित्य कुमार *वरि.तकनीकी सहायक-ए, सीएमएसई*

आशुभाषण	प्रथम
प्रश्नोत्तरी	प्रथम
निबंध लेखन	द्वितीय
तकनीकी लेखन	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है	तृतीय
कविता पाठ	तृतीय
कहानी/यात्रावृत्तांत	तृतीय
गीत गायन	तृतीय
कविता लेखन	सांत्वना

कालू दान

तकनीशियन-बी, एबीएसजी/सीएमएसई

गीत गायन	द्वितीय
कवितापाठ	सांत्वना

आशा ए एस

वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

टिप्पण व आलेखन	प्रथम
स्मृति परीक्षण	द्वितीय
श्रुतलेखन	द्वितीय

अंजना पी एस

वरि.सहायक, आईआईएसयू लेखा

श्रुतलेखन	सांत्वना
स्मृति परीक्षण	सांत्वना

सोनी मोहन

वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसआरई

निबंध लेखन	द्वितीय

लक्ष्मी एस

क्रय एवं भंडार अधिकारी, आईआईएसयू भंडार

श्रुतलेखन	प्रथम
गीत गायन	प्रथम
कविता लेखन	सांत्वना
कहानी/यात्रावृत्तांत	सांत्वना

षीजा जोय

वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

निबंध लेखन	प्रथम
कहानी/यात्रावृत्तांत	प्रथम
टिप्पण व आलेखन	द्वितीय
तकनीकी लेखन	द्वितीय
कविता लेखन	सांत्वना
श्रुतलेखन	सांत्वना

प्रकाश वी पी

वरि.सहायक, पीजीए, वीकेसी

श्रुतलेखन	द्वितीय
टिप्पण व आलेखन	तृतीय
निबंध लेखन	तृतीय
कहानी/यात्रावृत्तांत	सांत्वना
तकनीकी लेखन	सांत्वना
गीत गायन	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

देवांशी नायर, पुत्री श्री प्रकाश वी पी

वाचन	द्वितीय
सुलेख	तृतीय

देवांगी नायर, पुत्री श्री प्रकाश वी पी

वाचन	सांत्वना
सुलेख	सांत्वना

वीणा वी नायर

वरि.सहायक, आईआईएसयू लेखा

स्मृति परीक्षण	प्रथम

राधिका बाबु पी

वैयक्तिक सहायक, आईआईएसयू क्रय

स्मृति परीक्षण	तृतीय
स्मृति परीक्षण	तृतीय

अनिकेत कुमार

वैज्ञा/इंज-एसई, एसआईएस

प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

के एस एस एन दीक्षित

वैज्ञा/इंजी-एसडी, आईएसई

प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

सेबिन ए एस

वरि.सहायक, आईआईएसयू लेखा

स्मृति परीक्षण	सांत्वना

आरती एल

वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआर

तकनीकी लेखन	प्रथम
कवितापाठ	सांत्वना

शिवदास वई

तकनीशियन-डी, आईएसआरई

गीत गायन	सांत्वना

नवीन जी पाई

वैज्ञा/इंजी-एसजी, एसआईएस

प्रश्नोत्तरी	तृतीय
स्मृति परीक्षण	सांत्वना
टिप्पण व आलेखन	सांत्वना

सुशांत बेहेरा

तकनीशियन-बी, सीएमएसई

गीत गायन	सांत्वना

शिखा के आर

वरि.वैयक्तिक सचिव, सह निदेशक का कार्यालय

श्रुतलेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना

गोविन्द जी नायर

तकनीशियन-डी, एसआईएस

प्रश्नोत्तरी	द्वितीय

सिजो पोल्सन

वैज्ञा/इंजी-एससी, एलएमडी

प्रश्नोत्तरी	द्वितीय

अभिलाष स्करिया

वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआईएस

प्रश्नोत्तरी	तृतीय

लेनिना एम एस

तकनीकी अधिकारी-डी, आईएसआरई

कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	द्वितीय
कवितापाठ	द्वितीय
कविता लेखन	सांत्वना

अश्वती जी के

वरि.परियोजना सहायक, पीजीए, वीकेसी

तकनीकी लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना
श्रुतलेखन	सांत्वना
स्मृति परीक्षण	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

प्रेम प्रकाश

वरि.तकनीकी सहायक-ए, एसआर

निबंध लेखन	प्रथम
तस्वीर क्या बोलती है	प्रथम
कहानी लेखन	प्रथम
कविता लेखन	प्रथम
कवितापाठ	तृतीय
तकनीकी लेखन	तृतीय
आशुभाषण	सांत्वना

रोहित गुप्ता

वैज्ञा/इंजी-एसडी, एलवीआईएस

तकनीकी लेखन	प्रथम
तस्वीर क्या बोलती है	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना
आशुभाषण	सांत्वना
गीत गायन	सांत्वना

संदीप दास

वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआईएस

स्मृति परीक्षण	सांत्वना
टिप्पण व आलेखन	सांत्वना
श्रुतलेखन	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

श्रीनिका दास, *सुपुत्री* ***संदीप दास***

वाचन	प्रथम
देशभक्ति गान	द्वितीय
सुलेख	द्वितीय

जगरूप, *वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआर*

कवितापाठ	प्रथम
कविता लेखन	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है	द्वितीय
निबंध लेखन	तृतीय
आशुभाषण	तृतीय
कहानी लेखन	सांत्वना
प्रश्नोत्तरी	सांत्वना

इशाना, *सुपुत्री* ***श्री जगरूप***

देशभक्ति गान	तृतीय

मोनिका राते, *पत्नी* ***श्री जगरूप***

निबंध लेखन	सांत्वना

सर्वेश कुमार सिंह,

तकनीकी अधिकारी-सी, बीएसटीजी

प्रश्नोत्तरी	प्रथम
निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी/यात्रावृत्तांत	सांत्वना

दिनेश कुमार अगरवाल
वैज्ञा/इंजी-एसई, आईएसआरई

आशुभाषण	द्वितीय
तस्वीर क्या बोलती है	सांत्वना

खुशी अगरवाल, *सुपुत्री **श्री दिनेश कुमार अगरवाल***

देशभक्ति गान	सांत्वना

शुभी गोयल, *पत्नी **श्री दिनेश कुमार अगरवाल***

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	सांत्वना

गिरराज गुप्ता
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआर

कहानी लेखन/यात्रावृत्तांत	द्वितीय
कविता लेखन	तृतीय

रागिणी गुप्ता, *सुपुत्री **श्री गिरराज गुप्ता***

कहानी लेखन	प्रथम
निबंध लेखन	प्रथम
कविता पाठ	द्वितीय
देशभक्ति गान	द्वितीय

राहुल गुप्ता, *सुपुत्र **श्री गिरराज गुप्ता***

कहानी लेखन	द्वितीय
निबंध लेखन	द्वितीय
कविता पाठ	तृतीय

सोनिया गुप्ता, *पत्नी **श्री गिरराज गुप्ता***

निबंध लेखन	प्रथम
कहानी लेखन	प्रथम

कौस्तुभ सिंह *पुत्र **श्री प्रियदर्शन**, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआईएस*

देशभक्ति गान	सांत्वना
निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी लेखन	सांत्वना

अन्वय सिंह *पुत्र **श्री प्रियदर्शन***

वाचन	तृतीय
सुलेख	सांत्वना

राखी सिंह *पत्नी **श्री प्रियदर्शन***

कहानी लेखन	सांत्वना
निबंध लेखन	सांत्वना

कृष्णप्रिया सिंह *सुपुत्री **संजय कुमार सिंह**, वैज्ञा/इंजी-एसजी, सीएसएमडी*

कवितापाठ	प्रथम
देशभक्ति गान	तृतीय
निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी लेखन	सांत्वना

सोनी सिंह *पत्नी **संजय कुमार सिंह***

निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	तृतीय

आरव अगरवाल
*सुपुत्र **श्री पंकज अगरवाल**, वैज्ञा/इंजी-एस, सीएमएडी*

निबंध लेखन	तृतीय
कहानी लेखन	तृतीय

मुक्तिका एम
*सुपुत्री **श्री मुरुकेश एन**, वरि.तकनीशियन-ए, एसआईएस*

देशभक्ति गान	प्रथम
निबंध लेखन	सांत्वना
कविता पाठ	सांत्वना
कहानी लेखन	सांत्वना

आद्या अजय
*सुपुत्री **श्री अजय कुमार**, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, सीएमएसई*

देशभक्ति गान	प्रथम
सुलेख	प्रथम

आश्वी अजय *सुपुत्री **श्री अजय कुमार***

देशभक्ति गान	सांत्वना

श्वेता बिश्वास *पत्नी **श्री अजय कुमार***

निबंध लेखन	द्वितीय
कहानी लेखन	द्वितीय

आन मरिया
*सुपुत्री **श्रीमती सेलिन मरिया सैमण**, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआर*

निबंध लेखन	सांत्वना
कहानी लेखन	सांत्वना

देव नंदन जे एस
*सुपुत्र **श्रीमती सरिता पी आर**, वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एमआईएसए*

देशभक्ति गान	सांत्वना
कविता पाठ	सांत्वना

आदित्य देव जे एस *सुपुत्र **श्रीमती सरिता पी आर***

सुलेख	सांत्वना

जोण्सन एम जूबी
*सुपुत्र **श्री जूबी एम ईप्पन**, वरि.तकनीशियन-ए, सीएमएसई*

सुलेख	द्वितीय
देशभक्ति गान	सांत्वना

केविन ए जे
*सुपुत्र **श्री जगदीश चंद्रन आर**, वरि.तकनीकी सहायक-ए, सीएमएसई*

देशभक्ति गान	सांत्वना
सुलेख	सांत्वना
वाचन	सांत्वना

यदि शांति पाना चाहते हो,
तो लोकप्रियता से बचो।

अब्राहम लिंकन

अक्ष

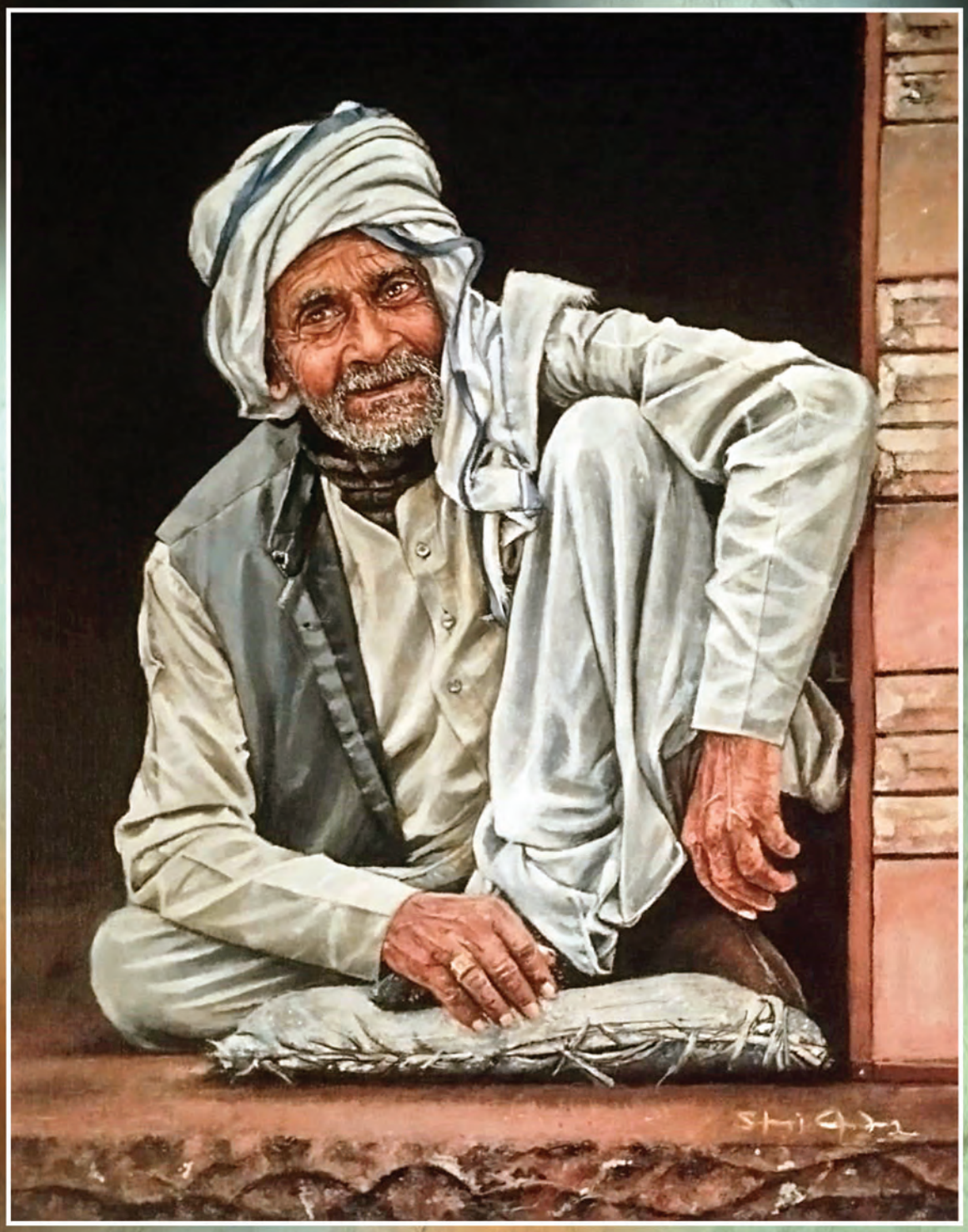

हिंदी अनुभाग, वीकेसी द्वारा प्रकाशित; मेसर्स भानु ऑफसेट, तंपानूर, तिरुवनंतपुरम में मुद्रित